आओ पढ़ना–लिखना सीखें और सिखाएं

ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए साक्षरता प्रषिक्षण पुस्तक

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इंदौर 452010 मध्यप्रदेष (भारत)

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान के अन्य प्रकाषन

1. **आओ स्वास्थ्य पढ़ाना सीखें**
   ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं के लिए स्वास्थ्य प्रषिक्षण पुस्तिका
   मॅकमिलन इंडिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण 2005
2. **आरोग्याची गुरूकिल्ली**
   आंगणवाडी सेविकांसाठी अरोग्यविषयक प्रषिक्षण
   मॅकमिलन इंडिया लिमिटेड, पहिली आवृत्ति 2006
3. **आओ कटाई–सिलाई सीखें और सिखाएं**
   नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के पाठ्यक्रम पर आधारित कटाई–सिलाई की प्रषिक्षण पुस्तक (सैद्धांतिक, प्रायोगिक एवं परीक्षा की तैयारी)
   मॅकमिलन इंडिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण 2007

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, इन्दौर, मध्यप्रदेष, भारत 2009 सर्वाधिकार सुरक्षित

पूर्वानुमति के बगैर इस पुस्तक में किसी भी अंष को किसी भी कारण से या किसी भी रूप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाषन के संदर्भ में अनाधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ में कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार मात्र लेखक के हैं। लेखक ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि इस पुस्तक में प्रकाषित सामग्री किसी और के प्रकाषन अधिकारों का किसी भी रूप में हनन नहीं करती है। यदि लेखक किसी प्रकाषन सामग्री का संदर्भ ढूंढ़ पाने में असफल रहा हो और इससे किसी के प्रकाषन अधिकारों का उल्लंघन होता है तो इस स्थिति में उचित कदम उठाने हेतु प्रकाषक को लिखित रूप में सूचित करें।

प्रथम संस्करण

मॅकमिलन पब्लिषर्ज़ इंडिया लिमिटेड
पुणे, दिल्ली, चेन्नई, जयपुर, मुंबई, पटना, बंगलुरू, भोपाल
चंडीगढ़, कोयम्बतूर, गुवाहाटी, हैदराबाद, हुबली, लखनऊ, मदुराई, कटक
नागपुर, तिरूअनंतपुरम, विषाखापट्टनम।

मॅकमिलन पब्लिषर्ज़ इंडिया लिमिटेड, 79, मालवीय नगर, टी.टी. नगर, भोपाल–462003 के लिए राजीव बेरी द्वारा प्रकाषित

मुद्रण स्थल : अबिन इन्टरप्राइजेस, जी–31, 244, जोन 1, एम.पी. नगर, भोपाल 462 011

आभार

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान अपने उन सभी स्टाफ का आभारी है जिन्होंने 'आओ पढ़ना–लिखना सीखें और सिखाएं' पुस्तक के प्रकाषन में अपनी बहुमूल्य सेवाएं दी हैं। इस पुस्तक की विषय–वस्तु और सिखाने के तरीके, संस्थान के 24 सालों के सतत् अनुभव पर आधारित है।

सबसे प्रषंसनीय भूमिका साक्षरता की उन प्रषिक्षिकाओं की है जिन्होंने अपने प्रषिक्षण के दौरान पूरी संवेदनषीलता से प्रयोग कर हर दिन एक सत्र के परीक्षण के बाद संषोधन करने में इस पुस्तक के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह उल्लेखनीय है कि संस्थान में प्रषिक्षिकाएँ वही महिलाएं रही हैं जो यहाँ से प्रषिक्षित हुई हैं।

बरली संस्थान की उस टीम को विषेष धन्यवाद जिसने इस पुस्तक की योजना, संरचना, समीक्षा, दिषा निर्देषन, षोध कार्य, मूल्यांकन व संषोधन कर प्रमाणित करने में अपनी उत्कृष्ठ सेवाएं दी हैं।

संस्थान के उन सभी प्रषिक्षणार्थियों का आभार जिन्हें प्रषिक्षित करने के दौरान इस विषय में सीखने, सिखाने के बाद इस पुस्तक की प्रस्तुति हो पाई।

इस रचनात्मक प्रकाषन के विकास में कम्प्यूटर कार्य, फोटोग्राफी, रेखांकन, फोटो स्केनिंग एवं फार्मेटिंग करने वाले स्टाफ व स्वयंसेविकाओं की अत्यन्त सराहनीय सेवाओं के लिए विषेष आभार।

उन लेखकों, षिक्षाविदों, आलोचकों को साधुवाद जिन्होंने महत्त्वपूर्ण सुझाव देकर बहुमूल्य योगदान दिया। साक्षरता के विषय विषेषज्ञों ने जानकारियाँ प्रमाणित कर पुस्तक के प्रकाषन में सक्रिय भागीदारी निभाई।

धन्यवाद उन सभी कार्यकर्ताओं का जिनके कठिन परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है।

उल्लेखनीय है कि इस 'आओ पढ़ना–लिखना सीखें और सिखाएं' प्रषिक्षण पुस्तक का प्रकाषन 'टू विंग्स' आस्ट्रिया के आर्थिक सहयोग से हुआ है।

विषय–सूची

आभार **1**

विषय–सूची **2–6**

परिचय **7–14**

स्वागत एवं प्रषिक्षण का परिचय, सफल प्रषिक्षिका/सहयोगी के गुण व कौषल और कक्षा के नियम **15–21**

पाठ एक : साक्षरता का महत्व **22–30**

सत्र 1 साक्षरता का परिचय 22–24

सत्र 2 साक्षरता का महत्व 25–27

सत्र 3 साक्षरता और हमारा विकास 27–29

सत्र 4 पाठ का दोहराव 29–30

पाठ दो : नाम **31–38**

सत्र 5 मुख्य षब्द 'नाम' का परिचय 31–33

सत्र 6 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 33–35

सत्र 7 गिनती सीखना 35–36

सत्र 8 पाठ का दोहराव 37–38

पाठ तीन : सेवा **39–47**

सत्र 9 मुख्य षब्द 'सेवा' का परिचय 39–42

सत्र 10 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 42–43

सत्र 11 गिनती सीखना 43–45

सत्र 12 पाठ का दोहराव 45–47

पाठ चार : बैठक **48–54**

सत्र 13 मुख्य षब्द 'बैठक' का परिचय 48–50

सत्र 14 लिखना और वाक्य पढ़ना सीखना 51–52

सत्र 15 गिनती सीखना 53–54

पाठ पाँचः महिला **55–62**

सत्र 16 मुख्य षब्द 'महिला' का परिचय 55–58

सत्र 17 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 58–59

सत्र 18 गिनती सीखना 59–61

सत्र 19 दोहराव 61–62

पाठ छह : सहयोग 63–69

सत्र 20 मुख्य षब्द 'सहयोग' का परिचय 63–65

सत्र 21 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 65–67

सत्र 22 गिनती सीखना 67–69

पाठ सात : नौकरी 70–78

सत्र 23 मुख्य षब्द 'नौकरी' का परिचय 70–72

सत्र 24 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 72–74

सत्र 25 जोड़ करना सीखना 74–76

सत्र 26 दोहराव 76–78

पाठ आठ : न्याय 79–86

सत्र 27 मुख्य षब्द 'न्याय' का परिचय 79–82

सत्र 28 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 82–84

सत्र 29 गिनती सीखना 84–86

पाठ नौ : अवतार 87–94

सत्र 30 मुख्य षब्द 'अवतार' का परिचय 87–89

सत्र 31 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 89–91

सत्र 32 घटाव करना सीखना 91–94

पाठ दस : भाईचारा 95–103

सत्र 33 मुख्य षब्द 'भाईचारा' का परिचय 95–97

सत्र 34 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 98–99

सत्र 35 गिनती सीखना 99–101

सत्र 36 दोहराव 101–103

पाठ ग्यारह : खोज 104–110

सत्र 37 मुख्य षब्द 'खोज' का परिचय 104–106

सत्र 38 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 106–108

सत्र 39 गुणा करना सीखना 108–110

पाठ बारह : एकता 111–117

सत्र 40 मुख्य षब्द 'एकता' का परिचय 111–113

सत्र 41 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 114–115

सत्र 42 गिनती सीखना 116–117

पाठ तेरह : परामर्ष 118–126

सत्र 43 मुख्य षब्द 'परामर्ष' का परिचय 118–121

सत्र 44 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 121–123

सत्र 45 भाग करना सीखना 123–124

सत्र 46 दोहराव 125–126

पाठ चौदह : प्रार्थना और उपवास 127–133

सत्र 47 मुख्य षब्द 'प्रार्थना और उपवास' का परिचय 127–129

सत्र 48 पढ़ना–लिखना और प्रार्थना याद करना 129–131

सत्र 49 गिनती सीखना 132–133

पाठ पंद्रह : दुनिया 134–141

सत्र 50 मुख्य षब्द 'दुनिया' का परिचय 134–137

सत्र 51 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 137–138

सत्र 52 गिनती सीखना 139–141

पाठ सोलह : छुआछूत 142–151

सत्र 53 मुख्य षब्द 'छुआछूत' का परिचय 142–145

सत्र 54 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 145–146

सत्र 55 गिनती सीखना 147–148

सत्र 56 दोहराव 149–151

पाठ सत्रह : औषधि 152–158

सत्र 57 कहानी और मुख्य षब्द 'औषधि' का परिचय 152–155

सत्र 58 पढ़ना–लिखना और कथन 155–156

सत्र 59 औषधि से जुड़ी जानकारी 156–158

पाठ अठारह : सृष्टि **159–165**

सत्र 60 कहानी और मुख्य षब्द 'सृष्टि' का परिचय 159–162

सत्र 61 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 162–163

सत्र 62 वातावरण से जुड़ी जानकारी 163–165

पाठ उन्नीस : साफ वातावरण **166–174**

सत्र 63 कहानी और मुख्य षब्द 'साफ वातावरण' का परिचय 166–169

सत्र 64 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 169–170

सत्र 65 साफ–सफाई से जुड़ी जानकारी 170–172

सत्र 66 दोहराव 172–174

पाठ बीस : सच झूठ **175–181**

सत्र 67 कहानी और मुख्य षब्द 'सच झूठ' का परिचय 175–178

सत्र 68 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 178–179

सत्र 69 सच का महत्त्व समझना 179–181

पाठ इक्कीस : घमंड **182–189**

सत्र 70 कहानी और मुख्य षब्द 'घमंड' का परिचय 182–185

सत्र 71 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 185–187

सत्र 72 वाक्य पढ़ना और अन्य जानकारी 187–189

पाठ बाइस : बढ़ावा देना **190–197**

सत्र 73 कहानी और मुख्य षब्द 'बढ़ावा देना' का परिचय 190–192

सत्र 74 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 192–193

सत्र 75 बढ़ावा देने का महत्व 194–196

सत्र 76 दोहराव 196–197

पाठ तेइस : षिक्षा **198–204**

सत्र 77 कहानी और मुख्य षब्द 'षिक्षा' का परिचय 198–200

सत्र 78 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 201–202

सत्र 79 वाक्य पढ़ना और अन्य जानकारी 202–204

पाठ चौबीस : विज्ञान **205–211**

सत्र 80 कहानी और मुख्य षब्द 'विज्ञान' का परिचय 205–207

सत्र 81 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 207–208

सत्र 82 वाक्य पढ़ना और अन्य जानकारी 209–211

पाठ पच्चीस : मैत्री 212–218

सत्र 83 कहानी और मुख्य षब्द 'मैत्री' का परिचय 212–214

सत्र 84 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 215–216

सत्र 85 वाक्य पढ़ना और अन्य जानकारी 216–218

पाठ छब्बीसः ऋषि 219–232

सत्र 86 कहानी और मुख्य षब्द 'ऋषि' का परिचय 219–226

सत्र 87 पढ़ना–लिखना और कथन याद करना 226–227

सत्र 88 वाक्य और कथन पढ़ना 228–230

सत्र 89 दोहराव 230–232

संदर्भ 233–234

****

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान : एक परिचय

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की स्थापना राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभा, नई दिल्ली द्वारा बहाई ग्रामीण महिला व्यावसायिक प्रषिक्षण संस्थान के नाम से 1985 में इन्दौर में की गई। 2001 से मध्यप्रदेष सोसायटी अधिनियम के तहत **''बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान''** के नाम से स्वषासी स्वयंसेवी संस्था बनी। 'बरली' षब्द का अर्थ है घर के ठीक बीच, वह आधार स्तम्भ (लकड़ी का खम्बा) जिस पर पूरा घर टिका रहता है। झाबुआ, धार जिले के आदिवासी समुदायों में ''बरली'' लड़कियों का जाना पहचाना नाम है। इस नाम को देने के पीछे यह अवधारणा है कि महिला ही समाज की 'बरली' है जिन पर पूरा समाज टिका है। महिला सषक्त होगी तो समाज सषक्त होगा।

संस्थान का उद्देष्य

संस्थान का मुख्य उद्देष्य ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं को प्रषिक्षित कर उनकी क्षमताओं और योग्यताओं को उजागर करना है जिससे वे अपना, अपने परिवार, गाँव, समुदाय और देष का विकास कर सकें। अपने आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में आगे बढ़ें व सषक्त बन सकें। अपने अधिकारों को पहचान सकें और उनमें अषिक्षा, गरीबी, अंधविष्वास व बीमारी कम हो सके। संस्थान ने इस बात को जरूरी समझा कि महिलाओं को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना बहुत जरूरी है ताकि उन्हें प्रषिक्षित कर अपने परिवार व समुदाय में रहने वाली गर्भवती महिलाओं, बच्चों व दूध पिलाने वाली माताओं की देखभाल ऐसे कर पाए कि माता की मृत्यु दर कम हो सके यानी मरने वाली महिलाओं व छोटे बच्चों की संख्या कम हो सके। संस्थान में प्रषिक्षण लेने आई बहनों का व्यक्तित्व विकास करना भी एक महत्वपूर्ण उद्देष्य है जिससे उनका आत्मविष्वास बढ़ सके, वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। व्यक्तित्व विकास व व्यावसायिक प्रषिक्षण से उन्हें अपना सामाजिक व आर्थिक विकास करने में मदद मिलती है। इससे बहनें अपने अन्दर मानवीय गुणों को विकसित कर अपने गाँव जाकर अपने समुदाय के विकास के लिए काम कर सकती हैं।

प्रषिक्षण कार्यक्रम

बरली संस्थान में पिछले 24 वर्षों में मध्यप्रदेष के धार, झाबुआ, आलीराजपुर, देवास, खरगोन, बड़वानी, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, भोपाल के अतिरिक्त छत्तीसगढ़, बिहार, उड़ीसा, आंध्रप्रदेष, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेष, सिक्किम, त्रिपुरा व मणिपुर आदि राज्यों के ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों के 450 गाँवों से 4500 महिलाएं प्रषिक्षण ले चुकी हैं। प्रषिक्षणार्थियों की उम्र 15 से 35 वर्ष के बीच की होती है।

प्रषिक्षण में प्राथमिकता ज्यादातर आदिवासी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, विकलांग, विधवा, परित्यक्ता, समाज द्वारा उपेक्षित, आर्थिक रूप से पीड़ित महिलाओं को दी जाती है जो ज्यादातर निरक्षर और कुछ उनमें से जो स्कूल की पढ़ाई बीच में छोड़ चुकी होती हैं। यह प्रषिक्षण दो प्रकार के हैः–

1. आवासीय प्रषिक्षण
2. गैर आवासीय प्रषिक्षण

1. आवासीय प्रषिक्षण

आवासीय प्रषिक्षण संस्थान परिसर इन्दौर में दिए जाते हैं, यह प्रषिक्षण निःषुल्क है।

- **सामुदायिक स्वयं सेविका –** यह प्रषिक्षण कार्यक्रम 6 महीने का होता है। यह ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं की जरूरत के अनुसार बनाया गया है। इस प्रषिक्षण में प्रषिक्षणार्थियों को साक्षरता, स्वास्थ्य, अपना और अपने समुदाय का विकास, बागवानी व पर्यावरण के साथ व्यावसायिक प्रषिक्षण जैसे कटाई–सिलाई, ब्लॉक प्रिंटिंग, कढ़ाई, हिन्दी व अंग्रेजी टाइपिंग और कम्प्यूटर का प्रषिक्षण दिया जाता है। प्रषिक्षणार्थी नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई–सिलाई की परीक्षा में बैठती हैं जहाँ से पास होने पर उन्हें प्रमाण पत्र दिया जाता है। इस प्रषिक्षण का उद्देष्य अपना और परिवार के सदस्यों का जीवन व अपने समुदाय को विकसित करना है। इस प्रषिक्षण को लेने के बाद प्रषिक्षणार्थी बहनें अपने–अपने गाँवों में जाकर अपने आस–पास के लोगों को स्वास्थ्य षिक्षा, नैतिक षिक्षा, बच्चों को अच्छी षिक्षा देना आदि सिखाती हैं।

- **सामुदायिक प्रषिक्षिका प्रषिक्षण –** यह प्रषिक्षण कार्यक्रम एक वर्ष का होता है। इसमें प्रषिक्षणार्थी आठवीं पास या इससे ज्यादा पढ़ी–लिखी होती हैं। पहले छह महीने में वे सामुदायिक स्वयं सेविका प्रषिक्षण लेती हैं। दूसरे छह महीने में वह प्रषिक्षण देती हैं। इस पुस्तक में इन प्रषिक्षणार्थियों के लिए 'सहयोगी' षब्द उपयोग किया गया है। ये सहयोगी ही आगे चलकर प्रषिक्षण देने योग्य हो जाती हैं। इन छह महीनों में साक्षरता, संचार, सभा आयोजन, परामर्ष, बच्चों की कक्षाओं का संचालन, महिला–पुरूष समानता, महिला के अधिकार, व्यक्तित्व विकास, टाइपिंग व कम्प्यूटर पर कार्य करना सीखती हैं इनमें से जो दसवीं पास होती हैं वे हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग की नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की परीक्षा देती हैं।

2. गैर आवासीय प्रषिक्षण

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा सन् 2004 में तीन विस्तार केन्द्रों की षुरूआत हुई। इनका संचालन छत्तीसगढ़ के जिला काँकेर में किया जा रहा है। ये विस्तार केन्द्र उन महिलाओं के लिए है जो घर छोड़कर संस्थान आकर प्रषिक्षण ले पाने में असमर्थ हैं। इन केन्द्रों में संस्थान से प्रषिक्षित प्रषिक्षणार्थियों ने काम करना षुरू किया। आज वे सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में सक्रिय हैं। यह प्रषिक्षण कार्यक्रम तीन माह का होता है। जिसमें मेरा अपना और अपने समुदाय का विकास, स्वास्थ्य षिक्षा व कटाई–सिलाई आदि का प्रषिक्षण हर रोज पाँच घंटे दिया जाता है। इस प्रषिक्षण के बाद उन्हें संस्थान से प्रमाणपत्र दिया जाता है। प्रषिक्षण में प्राप्त ज्ञान को, प्रषिक्षणार्थी महिला को अपनी सहेली, पड़ोस व परिवार के साथ बाँटने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि उनका परिवार व समुदाय उनके प्रषिक्षण का लाभ ले सके। उन्हें यह समझाया जाता है कि अगर वे प्रषिक्षण से स्वयं को सषक्त कर लेंगी तो वे अपने परिवार को सषक्त करने और समाज के सषक्तिकरण में अपना योगदान दे सकती हैं।

संस्थान के अन्य प्रषिक्षण कार्यक्रम

- **माता–पिता की बैठक–** सामुदायिक स्वयं सेविका प्रषिक्षण में आई प्रषिक्षणार्थियों के माता–पिता के लिए संस्थान में बैठक आयोजित की जाती है। इस बैठक से वे यह जानते हैं कि उनकी बेटी प्रषिक्षण में क्या सीखती है? कैसे सीखती है? उन्हें सिखाने वाले लोग कौन हैं? उनके सिखाने का तरीका क्या है, कहाँ रहती हैं? क्या खाती हैं आदि। जिससे समुदाय के अन्य लोगों को संस्थान के बारे में जानकारी मिलती है। यही माता–पिता जब वापस गाँव जाते हैं तथा दूसरों को संस्थान के प्रषिक्षण के बारे में बताते हैं तो दूसरे लोग भी अपनी बहू–बेटी को संस्थान में प्रषिक्षण के लिए भेज पाते हैं।

- **सौर ऊर्जा के उपयोग पर प्रषिक्षण–** संस्थान में प्रषिक्षण लेने आई सभी प्रषिक्षणार्थियों को सौर ऊर्जा का उपयोग कर खाना बनाने का प्रषिक्षण दिया जाता है। इस प्रषिक्षण हेतु संस्थान में एक बड़े सोलर किचन में तीन बड़े, एक मध्यम आकार का और 6 छोटे कुकर लगाए गए हैं। जिससे हर महीने में 900 किलो लकड़ी व 90 गैस सिलेण्डरों की बचत होती है। प्रषिक्षण के बाद अगर कोई प्रषिक्षणार्थी अपने घर सोलर कुकर ले जाना चाहती है तब संस्थान उस महिला को 10 दिन का प्रषिक्षण देता है। जिसमें सोलर कुकर को असेम्बल करना, उसका रखरखाव तथा उसका उपयोग करना सिखाया जाता है। इसके अलावा सोलर कुकर द्वारा कपड़ों पर प्रेस करना, रंगाई–छपाई के लिए काम में आने वाली मोम को गर्म करना, सोलर हीटर से पानी गर्म करना एवं सोलर ड्रायर से सब्जियाँ सुखाना आदि का प्रषिक्षण दिया जाता है और उपयोग करना सिखाया जाता है।

- **स्वयं सहायता समूह का प्रषिक्षण–** संस्थान में स्वयं सहायता समूहों के पदाधिकारियों को प्रषिक्षण दिया जाता है। इसमें सोलर कुकर का उपयोग खाद्य पदार्थ बनाने के लिए करना व सोयाबीन का उपयोग कर अलग–अलग तरह के खाने का सामान जैसे मिठाई, नमकीन बनाना और बेचना आदि सिखाया जाता है। समूह के सफल संचालन पर विषेष ध्यान दिया जाता है।

पाठ्यक्रम

संस्थान में नीचे लिखे विषयों पर पाठ्यक्रम विकसित किए गए हैं।

- **साक्षरता –** साक्षरता के बिना सषक्तिकरण संभव नहीं है। इसलिए संस्थान में साक्षरता के अंतर्गत पढ़ना–लिखना सिखाया जाता है। प्रषिक्षण की षुरूआत में ज्यादातर प्रषिक्षणार्थी निरक्षर या बीच में स्कूल की पढ़ाई छोड़ी हुई होती हैं। छह माह के प्रषिक्षण में वे पुस्तक पढ़ना, पत्र, संदेष, सूचना, चिन्ह तथा सरल गणित, वजन, भार, नाप, समय देखना व बताना सीखती हैं।

- **स्वास्थ्य षिक्षा –** स्वास्थ्य की पुस्तक में स्वस्थ पारंपरिक रीतिरिवाजों को बढ़ावा दिया है। गलत और नुकसानदायक मान्यताओं को कम करने की कोषिष की है। प्रषिक्षणार्थी स्वयं की, घर की तथा समुदाय के साफ–सफाई के बारे में सीखती हैं। सामान्य बीमारियाँ और रोकथाम, पोषण, पीने का पानी, स्वस्थ जीवन के बारे में ज्ञान पाती हैं। गर्भवती महिला की देखभाल, सुरक्षित प्रसव, प्रसव के बाद महिला की देखभाल, बच्चों का टीकाकरण, बच्चों के जन्म में अंतर, बच्चों का पालन–पोषण, किषोरावस्था, लिंग जागरूकता, जन्म–मृत्यु का पंजीकरण आदि विषयों को सीखती हैं।

- **मेरा अपना और अपने समुदाय का विकास –** इस प्रषिक्षण में अपना और अपने समुदाय का विकास, समाज में योगदान देने के लिए महिला को ज्ञान, अनुभव, क्षमता तथा आत्मविष्वास व आत्मसम्मान का विकास करना जरूरी है। इस प्रषिक्षण में प्रषिक्षणार्थी सभी मानवीय गुण व अच्छे संस्कार सीखती हैं। आत्मविष्वास, योग्यता, परामर्ष से निर्णय लेना, पहल करना, नेतृत्व करना, स्त्री–पुरूष समानता, महिलाओं के अधिकार व कानून आदि विकास के लिए गतिविधियाँ करवाई जाती हैं।

- **पर्यावरण संरक्षण –** ज्यादातर महिलाएं ऐसे परिवारों से होती हैं जिनके घर में खेती का कार्य होता है। इस प्रषिक्षण के माध्यम

से प्रषिक्षणार्थियों को खेती करने के नए–नए आसान तरीके सिखाए जाते हैं जैसेः– सब्जी लगाना, पानी का सही उपयोग, केंचुए से खाद बनाना, सौर ऊर्जा का उपयोग, सोलर कुकर से खाना बनाना, कचरे का निपटारा आदि पर प्रषिक्षण दिया जाता है। यहाँ पर रद्दी पेपर व खेत के बारीक कचरे और सूखे पत्ते से धुँआरहित कंडों का निर्माण किया जाता है। निर्मल ग्राम योजना के अंतर्गत संस्थान में महिलाओं ने राजमिस्त्री का प्रषिक्षण लिया और वे अब अपने गाँवों में षौचालय बना रही हैं।

- **व्यावसायिक कौषल –** इस प्रषिक्षण में कटाई–सिलाई, कढ़ाई, कपड़े की रंगाई, छपाई, टाइपिंग, कम्प्यूटर पर हिन्दी/अंग्रेजी की टाइपिंग और सोलर कुकर का उपयोग करना सिखाया जाता है। कटाई–सिलाई में सभी बहनें ज्यादा उत्सुक होती हैं यह विषय संस्थान का प्रमुख आकर्षण भी है। हिन्दी व अंग्रेजी टाइपिंग में जो प्रषिक्षणार्थी 10वीं पास होती हैं वे टाइपिंग सीखकर नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की परीक्षा देकर प्रमाण पत्र हासिल करती हैं। कपड़े की रंगाई, छपाई में प्रषिक्षणार्थी कपड़े रंगना, डिज़ाइन बनाना सीखती हैं और अपनी कला कौषल का विकास करती हैं।

साक्षरता से नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई–सिलाई की परीक्षा तक

संस्थान में प्रथम तीन माह साक्षरता का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। जिसमें कटाई–सिलाई से संबंधित षब्दों को षामिल किया गया है। इससे उन्हें सिलाई से संबंधित तकनीकी षब्द व जानकारी को याद रखने में सुविधा होती है। सिलाई पाठ्यक्रम महिलाओं में साक्षरता के प्रति रुचि को बढ़ाता है जो हर इंसान के विकास के लिए जरूरी है। तीन महीने के साक्षरता प्रषिक्षण के बाद प्रषिक्षणार्थी नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग द्वारा आयोजित कटाई–सिलाई की परीक्षा में बैठने योग्य हो जाती हैं। उन्हें कटाई–सिलाई में पूछे जाने वाले प्रष्न–उत्तर याद करवाए जाते हैं व लिखने का अभ्यास करवाते हैं। परीक्षा षुरू होने के पंद्रह दिन पहले रोज उनकी परीक्षा ली जाती है जिससे परीक्षा के समय उन्हें कोई डर या परेषानी नहीं आए। नीचे लिखा कथन महिलाओं के विकास में षिक्षा के महत्व को स्पष्ट करता है।

> **"उन्हें हर तरह से लड़कियों के प्रषिक्षण में संलग्न हो जाना चाहिए, उन्हें ज्ञान की षिक्षा देना, सद्व्यवहार, सही जीवनयापन, सुन्दर चरित्र निर्माण, षुद्धता, एकनिष्ठा, अर्ध व्यवसाय, दृढ़ता, घर की व्यवस्था, बच्चों की षिक्षा और लड़कियों को आवष्यकतानुसार जो भी जरूरी हो, वह सब कुछ महिला को देना है।"**

साक्षरता की सीढ़ी से स्वरोजगार तक का सफर

आलीराजपुर जिले की श्रीमती लीला भाटी सन् 1990 में संस्थान प्रषिक्षण लेने आई। उस समय वह निरक्षर थी। उसे पढ़ना–लिखना, हिसाब–किताब कुछ भी नहीं आता था। उसने संस्थान में तीन महीने का सामुदायिक स्वयं सेविका का प्रषिक्षण लिया। प्रषिक्षण में साक्षरता, स्वास्थ्य, अपना और अपने समुदाय का विकास और कटाई–सिलाई विषय सीखे। प्रषिक्षण के बाद संस्थान ने उसे काम पर रख लिया व काम के दौरान संस्थान ने उसकी प्रतिभाओं को तराषने का काम किया। षुरूआत में वह पढ़ने–लिखने से बहुत डरती थी व पढ़ाई में बहुत तकलीफ महसूस करती थी। संस्थान के मार्गदर्षन, प्रोत्साहन व लगातार कोषिष से वह निरक्षर से साक्षर हो गई। इसी दौरान लीला ने पाँचवी की परीक्षा भी पास की। समय के अनुसार उसने अपनी योग्यता को बढ़ाया व साक्षरता व कटाई–सिलाई की प्रषिक्षिका के पद पर काम किया। वह आत्मविष्वास के साथ संस्थान के बहुत से महत्वपूर्ण कामों को जिम्मेदारी से करती थी जैसेः– साक्षरता, कटाई–सिलाई के पाठ्यक्रम बनाने में मदद करना, साक्षरता व कटाई–सिलाई के लिए बाजार से सही और उचित भाव से सामान खरीदकर लाना, सामान का विवरण रजिस्टर में लिखना, सामान का लेखा–जोखा रखना, संस्थान की निदेषिका की मांग के अनुसार बैंक से पैसा लाना, कार्यक्रमों के अवसर पर स्लाइड षो दिखाना, वीडियो षूटिंग करना, फोटोग्राफी करना, बिजली और टेलीफोन के बिल भरना आदि। इसके बाद लीला किसी से भी बात करने में झिझकती नहीं थी क्योंकि पढ़ाई–लिखाई से उसमें आत्मविष्वास आया और जो आगे बढ़ता ही गया।

लीला अब झाबुआ जिले के पारा गाँव में अपने पति के साथ सिलाई की दुकान चला रही है। सिलाई के काम से उसकी अच्छी आमदनी हो जाती है। वह अपनी तीनों बेटियों को अच्छी षिक्षा देने के लिए स्कूल भेजती है। उनका भविष्य अच्छा बनाने के लिए वह दिन रात प्रयास कर रही है।

संस्थान में प्रषिक्षण देने का तरीका

परिचय

साक्षरता पाठ्यक्रम का हर सत्र और प्रषिक्षण का तरीका संस्थान में लगातार प्रयोग, परीक्षण और संषोधन करते हुए विकसित किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया में प्रषिक्षणार्थियों की समझ, उनकी संस्कृति और आवष्यकताओं का खासतौर से ध्यान रखा गया है। प्रयास किया गया

है कि यह पाठ्यक्रम सिर्फ ज्ञान का ही नहीं बल्कि प्रेरणा का भी स्रोत बने। इससे नैतिक मूल्यों का विकास होता है और मन की षक्ति एवं ऊर्जा को नई दिषा मिलती है। न्यायप्रिय और विकासषील बने रहने के लिए व्यक्ति विषेष और सामाजिक संस्थानों की मौलिक क्षमता को बढ़ाना आवष्यक है।

प्रषिक्षण के दौरान जो पढ़ाया और सिखाया जाता है, उन नैतिक गुणों को संस्थान में रहकर व्यवहार में भी लाया जाता है। ज्यादातर पाठों में व्यावहारिक उदाहरण दिए गए हैं, जिससे कठिन विषयों को भी आसानी से समझा जा सके।

चूंकि अधिकतर महिलाएं निरक्षर, अर्द्धसाक्षर या स्कूल छोड़ चुकी होती हैं, इसलिए इस प्रषिक्षण पुस्तक को सरल भाषा में बनाया गया है। इस पाठ्यक्रम को इस तरह से बनाया है कि प्रषिक्षण केवल प्रषिक्षिका या सहयोगी पर ही केन्द्रित नहीं रहे यानी सिर्फ पढ़ाने वाले ही बोलते नहीं रहें बल्कि प्रषिक्षणार्थी पूरी तरह से भागीदार रहें। हर प्रषिक्षणार्थी की सक्रिय भागीदारी पर जोर दिया गया है। इस पाठ्यक्रम को व्यावहारिक बनाने का पूरा प्रयास किया है।

हर सत्र का परिचय संस्थान की प्रषिक्षिका देती है। परिचय में प्रषिक्षिका पिछले सत्र का दोहराव करवाती है और पढ़ाए जाने वाले विषय की जानकारी देती है। जिन प्रषिक्षणार्थियों को पढ़ने, लिखने और समझने में कठिनाई होती है उन पर खास ध्यान और ज्यादा समय दिया जाता है।

समूह में सीखना–सिखाना : संस्थान की सभी प्रषिक्षणार्थियों को आठ–दस समूहों में बाँट दिया जाता है। जो बहनें एक साल का क्षेत्रीय स्वयं सेविका का प्रषिक्षण लेने आती हैं उन्हें हर समूह का 'सहयोगी' बनाया जाता है। वे अपने समूह की बहनों को स्वास्थ्य, साक्षरता, आध्यात्मिक, सिलाई का प्रषिक्षण देने में प्रषिक्षिका की सहायता करती हैं। संस्थान की प्रषिक्षिका इन्हें एक दिन पहले, अगले दिन प्रषिक्षणार्थियों को पढ़ाने का प्रषिक्षण देती है और फिर अगले दिन सहयोगी अपने–अपने समूहों को उन्हीं विषयों को पढ़ाती हैं। इस समय प्रषिक्षिकाएँ वहीं रहती हैं। अगर सहयोगी को कोई कठिनाई होती है तो वे मदद करती हैं। वे कुछ पढ़ाना भूल जाएं तो प्रषिक्षिकाएँ बताती हैं और अगर किसी के समूह के सदस्यों को कुछ समझ में नहीं आ रहा हो तो वे समझाती हैं। इस तरह से उन्हें प्रषिक्षण देने का अनुभव होता है और प्रषिक्षणार्थी उनसे अपनी समस्याओं को अच्छी तरह से समझते हैं, समूह में बढ़कर हिस्सा लेते हैं। वे सहयोगी के सामने खुलकर बात करते हैं क्योंकि वे उनके साथ ही रहती हैं। इसका एक कारण समूह का आकार छोटा होना भी है जिससे प्रत्येक प्रषिक्षणार्थी पर विषेष ध्यान रखा जाता है।

ये समूह पूरे छह महीने तक रहते हैं। ऐसा करने से उनमें स्वयं सेवा की भावना का विकास होता है और उन्हें अपने गाँव में जाकर औरों को भी प्रषिक्षित करने की योग्यता का व्यावहारिक प्रषिक्षण दिया जाता है। इस तरह से उनमें आत्मविष्वास बढ़ता है, वे अपने परिवार, पास–पड़ोस व गाँव के विकास के लिए काम करती हैं और उन्हें गाँव व समाज में अपनी पहचान बनाने का मौका मिलता है।

साक्षरता पाठ्यक्रम

साक्षरता पुस्तक का विकास

साक्षरता प्रषिक्षण संस्थान के प्रषिक्षण कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। साक्षरता प्रषिक्षण पद्धति जीवन के हर पहलू के साथ जुड़ी हुई है। यहाँ की प्रषिक्षण पद्धति और पाठ्यक्रम 'बहाई' दर्षन से प्रेरित है। पवित्र लेखों के अनुसार **"अज्ञान और षिक्षा का अभाव मानव जाति को विभाजित करने वाले अवरोधक हैं, अतः सबको प्रषिक्षण व षिक्षा मिलनी चाहिए।"**

पढ़ाने के मुख्य तरीकों में सहभागिता, खेल, सीखना–सिखाना और हम उम्र षिक्षण प्रणाली षामिल है। संस्थान का प्रेरणात्मक वातावरण सीखने को और भी सहज तथा आसान बना देता है। इस प्रषिक्षण से प्रषिक्षणार्थियों में 'सामाजिक परिवर्तन कार्यकर्ता' के रूप में सेवा देने की क्षमताओं का विकास होता है। यह पाठ्यक्रम अपनी निष्क्रियता छोड़कर सक्रिय सामाजिक सेवा करने के लिए प्रेरित करता है।

साक्षरता की पुस्तक खासतौर से उन ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए बनाई गई है जिन्हें कभी पढ़ने–लिखने का मौका नही मिला या फिर बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी हो। यह पाठ्यक्रम प्रषिक्षणार्थियों को गाँवों के सामुदायिक विकास में भागीदार बनाने में सहयोगी हैं। इस प्रषिक्षण पुस्तक को लिखने में सहयोग देकर उन लोगों ने स्वयं के भविष्य को लिखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जो निरक्षर होने के कारण सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। वैसे ये पाठ्यक्रम समाज के सभी वर्ग उपयोग कर सकते हैं क्योंकि इसमें षामिल सभी विषय हर इंसान के जीवन के लिए जरूरी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते ये पाठ्यक्रम समाज में सेवा देने की क्षमता का विकास करता है। इस पुस्तक में संस्थान में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों अपना और अपने समुदाय का विकास, स्वास्थ्य और कटाई सिलाई को एक–दूसरे के साथ जोड़कर पढ़ाया जाता है।

संस्थान द्वारा प्रकाषित 'आओ पढ़ना लिखना सीखे और सिखाएं' पुस्तक लगभग दो दषकों तक प्रषिक्षणार्थियों, प्रषिक्षिकाओं, संस्थान के

स्टाफ, स्वयंसेविकाओं, व्यावसायिक एवं अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ताओं, षिक्षा और महिलाओं के क्षेत्र में सेवा दे रहे विषेषज्ञों के साथ समय–समय पर परामर्ष करके विकसित किया गया है।

पाठ्यक्रम के उद्देष्य

भारत के संविधान में पढ़ने–लिखने का मौलिक अधिकार सभी को दिया गया है। साक्षरता पाठ्यक्रम का उद्देष्य प्रषिक्षणार्थियों को पढ़ने–लिखने की क्षमता के विकास के साथ–साथ उनके जीवन में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक बदलाव लाना भी है। जब वे अपनी इच्छा से खुद को तन–मन से इस पाठ्यक्रम के अनुसार ढालेंगे तभी यह पाठ्यक्रम सफल होगा।

इस पाठ्यक्रम के सभी पाठ और सत्र निम्नलिखित उद्देष्य प्राप्त करने के लिए बनाए गए हैं :

- साक्षरता पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देष्य प्रषिक्षणार्थी बहनों को सामाजिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है।
- प्रषिक्षणार्थियों की समझ बढ़ाना और उन्हें सक्षम करना जिससे वे अपने समुदायों में स्थानीय मानव संसाधन के रूप में विकसित हो सके।
- प्रषिक्षणार्थियों को इस तरह से सक्षम कर देना, जिससे वे अपने परिवार और गाँव के विकास में मदद कर सकें, अंधविष्वास, छुआछूत जैसी सामाजिक बुराईयां दूर कर सके तथा उन्हें जागरूक करने की अपनी जिम्मेदारी समझ सकें और अपना योगदान दे सकें।
- वे इस योग्य बन सकें कि ईष्वर के पवित्र लेखों को पढ़कर समझे कि उनके जीवन का क्या उद्देष्य है तथा अपने जीवन में आत्मनिर्भर बन सकें।
- ग्रामीण और आदिवासी महिलाएं साक्षरता प्रषिक्षण के बाद इस योग्य हो जाएं कि नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई–सिलाई की परीक्षा में बैठ सकें।
- अपने समुदाय के लोगों को पढ़ने–लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

साक्षरता पाठ्यक्रम की संरचना

प्रषिक्षण के पहले दिन 'स्वागत एवं संस्थान का परिचय, प्रषिक्षिका/सहयोगी के गुण और कौषल' सत्र होता है। इस सत्र में प्रषिक्षणार्थियों का संस्थान में स्वागत किया जाता है और उन्हें संस्थान और पाठ्यक्रम का परिचय दिया जाता है। इसके बाद ही पाठ्यक्रम का पहला पाठ षुरू होता है।

पुस्तक में सबसे पहले साक्षरता का महत्व बताते हैं कि पढ़ना लिखना क्यों जरूरी है और इसके क्या फायदे हैं? 1 से 100 तक गिनती पढ़ना, लिखना, बोलना और साधारण गणित जैसे जोड़, घटाव, गुणा और भाग करना सीखती हैं।

साक्षरता पाठ्यक्रम में कुल 26 पाठ हैं और इन्हें 89 सत्रों में बाँटा गया है। हर पाठ में एक–एक घंटे के तीन या चार सत्र होते हैं। हर सत्र में सत्र योजना दी गई है जिसमें क्या पढ़ाया जाएगा और कैसे पढ़ाया जाएगा उसके दिषा–निर्देष दिए गए हैं। हर दिन एक सत्र पूरा किया जाता है और हर सत्र में कुछ चरण दिए गए हैं।

साक्षरता पुस्तक की विषेषताएं –

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की पुस्तक 'आओ पढ़ना लिखना सीखें और सिखाएं' में निम्नलिखित विषेषताएं हैं।

1. साक्षरता की पुस्तक मुख्यतः आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं के लिए बनाई गई हैं।
2. इस पुस्तक के माध्यम से प्रषिक्षणार्थी को हिन्दी पढ़ना, लिखना और बोलना सिखाया जाता है।
3. पुस्तक में साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है ताकि सभी इसे आसानी से समझ सकें।
4. 1 से 100 तक गिनती, साधारण गणित जैसेः– जोड़, घटाव, गुणा व भाग करना सीखती हैं।
5. इस पुस्तक में पढ़ाने का तरीका बिल्कुल सीधा और सरल है।
6. हर पाठ में एक मुख्य षब्द होता है। प्रषिक्षणार्थी मुख्य षब्द के अक्षरों और मात्राओं को अलग–अलग पढ़ना, लिखना और बोलना सीखती हैं। इस तरह हर पाठ में उन्हें नए अक्षरों और मात्राओं को सिखाया जाता है। साथ ही सीखे गए अक्षरों और मात्राओं का

प्रयोग कर नए षब्दों को बनाना सीखती जाती हैं। जैसेः– नाम ना + म अक्षरों से नए षब्द बनाते हैं, उदाहरण के लिए नम, नमन, मना, मनाना, मान, मामा, नाना आदि। इस तरह उनमें धीरे–धीरे सरल षब्दों और वाक्यों को बनाने की क्षमता विकसित होती जाती है।

7. हर पाठ में मुख्य षब्द से संबंधित एक चित्र दिया गया है। चित्रों के माध्यम से प्रषिक्षणार्थी षब्दों को पहचानती हैं और मुख्य षब्द पर चर्चा करती हैं।

8. हर प्रषिक्षणार्थी समूह चर्चा में भाग लेती है जिसमें सभी को बोलने का अवसर मिलता है। चर्चा के विषय सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक मुद्दों से जुड़े होते हैं। चर्चा के दौरान वे दूसरों के सामने अपनी बातें रखना सीखती है जिससे उनका आत्मविष्वास बढ़ता है, मन का डर और हिचक खत्म होती है। इस तरह वे सामाजिक बुराइयों जैसेः– अंधविष्वास, छुआछूत आदि के बारे में जानती हैं और उन्हें दूर करने में अपना क्या योगदान हो सकता है के बारे में समझती हैं।

9. हर रोज षाम को पढ़ाए गए पाठ का दोहराव करवाया जाता है ताकि प्रषिक्षणार्थी सही तरीकें से सीख सकें।

10. पुस्तक में मौखिक और लिखित परीक्षा के प्रष्न दिए गए हैं। परीक्षा की जाँच के बाद पता चलता है कि प्रषिक्षणार्थी को कितना समझ में आया है।

11. हर पाठ में प्रार्थनाएं और पवित्र लेखों से लिए गए अंष दिए गए हैं जिससे वे अपने अंदर एकता, प्रेम, भाईचारा जैसे सद्गुणों का विकास कर सकें। प्रार्थनाएं और कथन याद करना भी इस पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

12. इस पुस्तक में कटाई सिलाई से संबंधित षब्दों को षामिल किया गया है ताकि प्रषिक्षणार्थी सिलाई से संबंधित जानकारी याद रख सकें और इस योग्य हो जाएं कि नेषनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की परीक्षा में बैठ सकें और सफल होकर प्रमाण पत्र हासिल कर सकें जो उन्हें गैर सरकारी संस्था या आंगनवाड़ी में काम करने या स्वरोजगार चलाने के लिए बैंक से लोन लेने में सहायक होता है।

13. प्रषिक्षणार्थी खुद सीखकर दूसरों को सिखाने की योग्यता का विकास करती है।

14. पुस्तक में पढ़ाने के कई तरीकों को षामिल किया गया है जिससे पढ़ने वालों की रूचि बनी रहती है और उनका पढ़ाई में मन लगा रहता है।

सत्र क्रमांक और षीर्षक

उद्देष्य

हर सत्र का उद्देष्य भी संस्थान की प्रषिक्षिका बताती है। उद्देष्य वे मापदंड होते हैं, जिससे यह पता चलता है कि प्रषिक्षणार्थियों को सत्र के अंत तक किस योग्य हो जाना चाहिए। इससे प्रषिक्षणार्थियों के साथ–साथ प्रषिक्षिका को भी मदद मिलती है। वे पाठ और सत्र के अंत में प्रषिक्षणार्थियों तथा सहयोगियों का मूल्यांकन कर पाती है और जान पाती है कि सत्र के षुरूआत में जो उद्देष्य बनाए गए थे, वे पूरे हुए या नहीं।

प्रषिक्षण सामग्री

प्रषिक्षण सामग्री, वह सामग्री होती है जिसका उपयोग पढ़ाने के लिए किया जाता है। प्रषिक्षिका प्रषिक्षण देने से पहले सामग्री तैयार करके रखती है। सामग्री में ब्लैक बोर्ड, चॉक, किताब, पट्टी, पेम, पेन, पेंसिल, कापी, इंच टेप, स्केल, रबर, अक्षर कार्ड एवं अक्षर चार्ट प्रयोग किये जाते हैं।

सत्र योजना

साक्षरता पाठ्यक्रम में कुल 26 पाठ हैं जिन्हें 89 सत्रों में बांटा गया है। हर पाठ में एक–एक घंटे के तीन या चार सत्र होते हैं। हर सत्र में सत्र योजना होती है जिसमें क्या पढ़ाया जाएगा उसकी जानकारी दी जाती है। हर दिन एक सत्र कक्षा में पढ़ाया जाता है। सत्र योजना में कुछ चरण होते हैं।

चरण

चरण में प्रषिक्षणार्थियों को समझाने के लिए जानकारी और गतिविधियाँ होती हैं। चरण में सभी प्रषिक्षणार्थी भाग लेते हैं। हर चरण में बताया

जाता है कि कौन संचालित करेगा? संचालित करने के लिए चरण में दिषा–निर्देष दिए जाते हैं।

चरणों को पढ़ाने के लिए जो तरीके अपनाए जाते हैं, वे इस प्रकार हैंः–

समूह चर्चा

व्यवहारिक उदाहरण

चित्र पर चर्चा

अक्षर कार्ड

प्रष्न और उत्तर

कहानी

जानकारी देना

जाँच

व्यक्तिगत भागीदारी

खेल

नोटः *नोट में जानकारी देने वाले के लिए निर्देष दिए गए हैं।*

प्रषिक्षिका द्वारा समापन

सत्र का समापन संस्थान की प्रषिक्षिका करती है। सत्र के अंत में पूरे सत्र में दी गई मुख्य जानकारियों का दोहराव करवाती है और सत्र में दी गई जानकारी को अगले सत्र के साथ जोड़ती है।

षिक्षा का स्तर

हर समूह में निरक्षर, साक्षर और थोड़ी पढ़ी–लिखी प्रषिक्षणार्थी होती है या वे जो पढ़ाई के बीच में स्कूल छोड़ चुकी होती हैं।

अपनी बोली

षुरूआत में सहयोगी अपने समूह को नई और कठिन जानकारियों को उनकी बोली में समझाने के लिए उन प्रषिक्षणार्थियों की मदद लेती है जिन्हें उनकी बोली आती है। प्रषिक्षण के पहले कुछ हफ्तों तक प्रषिक्षणार्थियों को ज्यादा से ज्यादा उनकी बोली में समझाया जाता है क्योंकि उन्हें हिन्दी अच्छी तरह से समझ में नहीं आती है।

प्रषिक्षण के माध्यम

प्रषिक्षण में उन्हें सक्रिय सहभागीदार बनाने के लिए नीचे लिखे तरीके अपनाए जाते हैं। इन तरीकों से प्रषिक्षणार्थी कक्षा में ज्यादा से ज्यादा भाग लेती हैं जिससे सीखने में आसानी होती है और रूचि बढ़ने के साथ–साथ विषय की समझ भी बढ़ती है।

- **अक्षर कार्डों से सीखना**

  अक्षर कार्ड पुष्टे के छोटे–छोटे चौकोर टुकड़े होते हैं जिन पर अक्षर व मात्राएं लिखी होती हैं। इनकी सहायता से बहनें अक्षर व पाठ में दिए षब्दों को बनाना सीखती हैं व बार–बार अभ्यास करती हैं।

- **खेल–खेल में सिखाना**

  खेल का साक्षरता प्रषिक्षण में बहुत महत्व है। खेलों के माध्यम से विषय को समझाया गया है। पढ़ाने के साथ प्रषिक्षणाथियों को चुनौती खेल, सुनकर लिखने का खेल, षब्द कड़ी खेल, संख्या पहचान खेल और संख्या ढूंढ़ों खेल खिलाए जाते है। खेल से प्रषिक्षणार्थियों में उत्साह आता हैं और खेल–खेल में सब याद कर लेते हैं। खेल के माध्यम से नए अक्षरों से षब्द बनाने और पाठ का अभ्यास करने में मदद मिलती है। प्रषिक्षिका खेल को षुरू करने से पहले खेल के नियम सभी प्रषिक्षणार्थियों को बताती है। प्रषिक्षिका इस बात पर विषेष ध्यान देती है कि सभी प्रषिक्षणार्थियों को खेल में भाग लेने का मौका मिले।

- **कहानियाँ और कथन** : इस पाठ्यक्रम में कहानियों और कथनों का उपयोग किया गया है। ये कहानियाँ व्यावहारिक और आध्यात्मिक मार्गदर्षन देती हैं।

- **समूह चर्चा** : सभी पाठों में सहयोगी और प्रषिक्षणार्थी आपस में कई विषयों पर चर्चा करते हैं। चर्चा करने से मन में नए–नए विचार आते हैं, अपनी बात दूसरों के सामने बिना किसी झिझक या डर के कह पाते हैं और वे एक दूसरे से सीखते हैं।
- **चित्र** : चित्रों के माध्यम से जानकारी जल्दी, आसानी और प्रभावषाली तरीके से समझ में आती है। पूरे पाठ्यक्रम में हमने उन्हीं चित्रों का उपयोग करने की कोषिष की है, जिनमें गाँव के जीवन की और गाँव के रहन–सहन की झलक मिलती है।

दोहराव और परीक्षा

- **दोहराव** : पाठों और सत्रों में दी गई जानकारी का दोहराव कई तरीकों से होता है, जैसेः

  हर पाठ की षुरूआत में, प्रषिक्षिका पिछले पाठ में पढ़ाए गए सभी विषयों का संक्षेप में दोहराव करवाती है।

  हर सत्र का अभ्यास, सुबह पढ़े गए सत्र का अभ्यास षाम को एक घंटे की कक्षा में किया जाता है।

  पाठ पूरा होने पर, प्रषिक्षिका पाठ के सभी सत्रों का संक्षेप में दोहराव करवाती है।

- **परीक्षा** : हर पाठ की प्रषिक्षणार्थियों और सहयोगियों की परीक्षा ली जाती है। पाठ 2 से सहयोगी और प्रषिक्षणार्थी लिखित परीक्षा देतीं है। सभी लिखित परीक्षाएँ संस्थान में ली जाती हैं और निम्न बातों पर ध्यान दिया जाता है कि प्रषिक्षणार्थी :–

  1. प्रष्नों को समझ पा रही हैं या नहीं।
  2. उत्तर पूरा लिख पा रही हैं या नहीं।
  3. उत्तर लिखते समय प्रष्न नं. लिख रही हैं या नहीं।
  4. खाली स्थान और सही गलत को हल करने पर ध्यान दे रही हैं या नहीं।
  5. गणित के सवाल हल कर पा रही हैं या नहीं।

उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते समय प्रत्येक प्रषिक्षणार्थी के ऊपर खास ध्यान दिया जाता है और पता लगाया जाता है कि पढ़ाई गई बातें प्रषिक्षणार्थियों को समझ में आ रही हैं या नहीं।

बदलकर अपनी आय का साधन बना सकती हैं। संस्थान में हिन्दी साक्षरता सिखाई जाती है जिसके द्वारा महिलाएं अपनी समस्या और जिम्मेदारी को समझती हैं। अपने अधिकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करके, खुद अपनी समस्याएं दूर करना सीखती हैं। अपने आस–पास की दुनिया को समझती हैं। साधारण हिसाब किताब करना सीखती हैं। पत्र लिखना और पढ़ना सीख जाती हैं।

प्रषिक्षण से विषय का ज्ञान बढ़ता है और आत्मविष्वास बढ़ता है। प्रषिक्षण और अभ्यास से हम अपना काम और अच्छी तरह से कर सकते हैं। साक्षर होकर कला, ज्ञान सीख सकते हैं। साक्षर होने के बाद हम स्वयं को आगे बढ़ाते ही हैं साथ में अपने परिवार और अपने गाँव के लोगों को प्रषिक्षित कर सकते हैं। प्रषिक्षण का उद्देष्य है कि आप स्वयं अपना विकास कर सकें और वापस जाकर अपने परिवार व समुदाय में सेवा दे सकें।

साक्षरता के दो प्रषिक्षण होते हैं एक प्रषिक्षण में जो पढ़ना लिखना नहीं जानते उन्हें साक्षर किया जाता है और दूसरा प्रषिक्षण जो पढ़ाई छोड़ देती हैं उनको दूसरों को साक्षर करना सिखाया जाता है। हर रोज तीन घंटे साक्षरता की कक्षा लगती है। एक घंटा साक्षर करने की, एक घंटा साक्षरों का प्रषिक्षण और एक घंटा सभी का अभ्यास। प्रषिक्षण के षुरू में सभी प्रषिक्षणार्थियों को कापी, पेन, पट्टी, किताबें, इंच टेप दे दी जाती हैं। इसके साथ ही साक्षरता के लिए उपयोग में आने वाली सामग्री जैसे बोर्ड, डस्टर, चॉक, कापी, किताब, अक्षर कार्ड, इंच टेप कैसे काम में लाते हैं, सिखाया जाता है। पढ़ाई के लिए कक्षा को छोटे–छोटे समूह में बाँटते हैं। छोटे समूहों में पढ़ाना सरल होता है तथा हर एक प्रषिक्षणार्थी पर अच्छे से ध्यान दिया जाता है। हर समूह में करीब आठ सदस्य होते हैं। समूह में एक थोड़ी षिक्षित प्रषिक्षणार्थी होती है जो बीच में ही पढ़ाई छोड़ चुकी होती है उसे सहयोगी कहते हैं। सहयोगी पूरे प्रषिक्षण में प्रषिक्षिका की मदद करती है।

चरण 3: प्रषिक्षिका द्वारा पाठ्यक्रम की जानकारी

– *नीचे लिखी जानकारी प्रषिक्षणार्थियों को पढ़कर सुनाएं।*

चरण एक में हमने जाना कि संस्थान में छह महीने रहकर हम पढ़ना–लिखना सीखेंगे जिससे हम अपने और अपने परिवार व समुदाय को आगे बढ़ा सकेंगे। हम आने वाले तीन महीने के साक्षरता प्रषिक्षण में नीचे लिखे पाठों को पढ़ेंगे।

पाठ एक : साक्षरता का महत्व
पाठ दो : नाम
पाठ तीन : सेवा
पाठ चार : बैठक
पाठ पाँच : महिला
पाठ छह : सहयोग
पाठ सात : नौकरी
पाठ आठ : न्याय
पाठ नौ : अवतार
पाठ दस : भाईचारा
पाठ ग्यारह : खोज
पाठ बारह : एकता
पाठ तेरह : परामर्ष
पाठ चौदह : प्रार्थना और उपवास
पाठ पन्द्रह : दुनिया
पाठ सोलह : छुआछूत
पाठ सत्रह : औषधि
पाठ अठारह : सृष्टि
पाठ उन्नीस : साफ वातावरण
पाठ बीस : सच झूठ
पाठ इक्कीस : घमंड
पाठ बाइस : बढ़ावा देना

- सहयोगी को विनम्र होना चाहिए।
- साहस से परिस्थिति का सामना करने वाली होना चाहिए।
- सेवा की भावना हो।
- प्रषिक्षणार्थियों से मित्रतापूर्ण व्यवहार हो।
- प्रषिक्षणार्थियों के सामने ऐसे उदाहरण दे सके जो उनके जीवन के साथ जुड़े हों।
- कक्षा को रोचक बनाने वाली हो।
- समय–समय पर प्रषिक्षणार्थियों को सीखने के लिए प्रषंसा, बढ़ावा देने वाले तरीकों से प्रेरित करें ताकि सीखने वाले उत्साहपूर्वक सीखें।
- स्वयं की गलतियों को पहचान कर, उनसे सीख कर और आगे बढ़ सके।
- प्रषिक्षणार्थियों की गलतियों को माफ कर उन्हें आगे बढ़ाने वाली हो।
- हर विषय जानने और उसे सीखने की इच्छा हो।
- अपना पूरा ध्यान विषय–वस्तु पर लगा सकें। समूह की चर्चा पर पूरा ध्यान दे सकें, जिससे समूह चर्चा करते हुए विषय से भटक न जाए।
- स्वअनुषासित और समय की पाबंद हो, जिसे देखकर सीखने वाले भी वैसे ही बन सकें।

ये सब गुण होने से प्रषिक्षणार्थी कक्षा में मन लगाकर सीखेंगे, सिखाने वाले पर विष्वास करेंगे, कक्षा में उन्हें बहुत मजा आएगा, विषय के प्रति उनकी रूचि और लगन बढ़ेगी और कक्षा में सीखने–सिखाने के लिए एक सहज वातावरण बनेगा।

सहयोगियों का प्रषिक्षण

प्रषिक्षिका द्वारा सहयोगियों को हर दिन दो घंटे का प्रषिक्षण दिया जाता है। ये प्रषिक्षण उन सब विषयों का होता है जो संस्थान में पढ़ाए जाते हैं, जैसे साक्षरता, मेरा अपना और मेरे समुदाय का विकास, स्वास्थ्य षिक्षा और कटाई–सिलाई। हर विषय सीखने के बाद सहयोगी अगले ही दिन अपने–अपने समूह की प्रषिक्षणार्थी बहनों को पढ़ाती है। इस तरह सहयोगी जो सीखती हैं अगले दिन व्यावहारिक रूप में उसका अभ्यास करती हैं। इस समय प्रषिक्षिका भी वहीं होती है और ध्यान रखती है कि किसी भी सहयोगी को समूह में पढ़ाने में कोई कठिनाई तो नहीं हो रही है। अगर किसी सहयोगी को समूह में कोई कठिनाई होती है, जैसे वे कुछ पढ़ाना भूल जाएं या समूह के किसी सदस्य को कुछ समझ न आए तो प्रषिक्षिका मदद करती है। प्रषिक्षिका हर सहयोगी की क्षमता के विकास पर पूरा ध्यान रखती है उन्हें सीखने और सिखाने में हर प्रकार से मदद करती है।

सहयोगी का योगदान

सहयोगी अलग–अलग विषयों को पढ़ाने में योगदान देती है।

साक्षरता

साक्षरता की 'आओ पढ़ना लिखना सीखें' किताब में निरक्षर बहनों को पढ़ाने के तरीके की जानकारी दी गई है जैसे हर पाठ, हर सत्र और हर चरण कैसे पढ़ाया जाता है। प्रषिक्षण में इन गतिविधियों को करने का तरीका सिखाया जाता हैः– चित्र पर चर्चा करवाना, पढ़ना सिखाना, लिखना सिखाना, कथन याद करवाना, गिनती सिखाना, जोड़, घटाव, गुणा व भाग सिखाना, कहानी पर चर्चा करवाना, खेल खिलाना आदि।

स्वास्थ्य षिक्षा

स्वास्थ्य षिक्षा में स्वास्थ्य की अवधारणा, विषेषतौर पर षारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक स्वास्थ्य षामिल है। प्रषिक्षण में हर पाठ, हर सत्र और हर चरण में दिए गए गतिविधियों को करने का तरीका सिखाया जाता हैः– समूह चर्चा, जानकारी देना, चित्र और पोस्टर के माध्यम से जानकारी समझना, गीत, कहानी और उदाहरण के माध्यम से जानकारी समझाना, सही और गलत मान्यताओं में फर्क समझाना, घरेलू ईलाज करना सीखना आदि।

समूह में सहयोगी के साथ खाना परोसने का काम करती है। सहयोगी ध्यान रखती है कि पूरा काम सही तरीके से हो, सबको खाना मिले, खाना खाने के बाद खाने के कमरे की सफाई ठीक से हो, बचा हुआ खाना ढंक के रखा जाए आदि।

सहयोगी को होने वाले फायदे

ऊपर लिखे सभी तरह के सहयोग देने से सहयोगी को जो फायदे मिलते हैं वे इस प्रकार हैः

- अपने परिवार और समुदाय में आसपास की निरक्षर महिलाओं का एक समूह बनाकर उन्हें साक्षर कर सकती हैं।
- अपने परिवार और समुदाय के सदस्यों, बच्चों की षिक्षा खासकर लड़कियों को पढ़ाने के महत्व को समझाकर जागरूक कर सकती है। उन्हें जागरूक कर सकती हैं कि बच्चों के लिए केवल स्कूल ही नहीं बल्कि ऊँची षिक्षा प्राप्त करना कितना जरूरी है।
- संस्थान से साक्षर होकर गई प्रषिक्षणार्थी जो उनके गाँव के आस–पास रहती है, उन्हें पढ़ना लिखना जारी रखने और संस्थान से प्राप्त योग्यताओं और क्षमताओं का उपयोग करने में मदद कर सकती है।
- स्वयं के विकास के बारे में जानकारी पाती है और स्वयं का विकास करने के लिए पढ़ी गई जानकारी का उपयोग करती है।
- सभा का आयोजन करना सीखती हैं और सभी के सामने अपनी बात कहना सीख जाती हैं। जैसेः– पंचायत में बोलना, अपने पर अन्याय होने पर अधिकार पाने के लिए आवाज उठाना, बीमार होने पर स्वयं की देखभाल के लिए आवाज उठाना आदि।
- समुदाय के विकास के बारे में समझने लगती है जिसका उपयोग अपने परिवार और समुदाय में कर सकती है। जैसे पंचायत के कामों को समझने, विकास योजनाओं को समझना और महिलाओं के अधिकारों के प्रति स्वयं जागरूक होती है और अपने परिवार और आसपास की महिलाओं को जागरूक कर सकती है।
- बच्चों की षिक्षा के महत्व को सीखती है और उन कक्षाओं के संचालन पर जानकारी लेती है। समुदाय में जाकर अपने परिवार और समुदाय के बच्चों को षिक्षा दने के महत्व पर जानकारी देती है।
- पंचायत या समुदाय के विकास से जुड़े कामों को करते समय वह प्रषिक्षण से प्राप्त कौषलों का उपयोग करती है।
- विषेष कार्यक्रमों के आयोजन अपने समुदाय में करने के कौषल प्राप्त करती है। जैसे अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस, विष्व पर्यावरण दिवस, आदि। अपने समुदाय में लौटने के बाद वह इन दिवसों का आयोजन करती है।
- घरेलू इलाज से अपने परिवार और समुदाय के सदस्यों को सामान्य बीमारियों का इलाज कर सकती है।
- आँगनवाड़ी और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के साथ जुड़कर स्वास्थ्य से संबंधित कार्य में सहायता कर सकती है।
- स्वास्थ्य से जुड़ी सही और गलत मान्यताओं में फर्क दूसरों को भी बता सकती है।
- बीमार होने पर सही समय, सही जगह और सही इलाज करवा सकती है।
- महिलाओं और बच्चों का सही पोषण की जानकारी दे सकती है।
- घर और घर के आसपास और समुदाय की साफ–सफाई के महत्व की जानकारी दे सकती है।
- अपने समुदाय में स्वयं की टेलरिंग का व्यवसाय शुरू कर सकती है।
- अपने परिवार और समुदाय की महिलाओं को कटाई–सिलाई करना सिखा सकती है।
- संस्थान से प्रषिक्षण प्राप्त की हुई अन्य प्रषिक्षणार्थियों को, जो उनके समुदाय में या आसपास के ही समुदाय में हो उनको सिलाई करने में सहायता कर सकती है। सिलाई से कमाई कर अपने परिवार को सहयोग दे सकती है।
- समुदाय के महिलाओं को इसी तरह के प्रषिक्षण लेने के लिए जागरूक कर सकती है।

चरण 5ः प्रषिक्षिका द्वारा कक्षा के नियम पर चर्चा

– प्रषिक्षणार्थियों को यह बताएं कि कक्षा को अच्छी तरह से चलाने के लिए कक्षा के लिए कुछ नियम होना जरूरी है।
– हम सभी को इन नियमों का पालन करना होगा।
– चर्चा करते हुए नीचे लिखे कक्षा के नियम बनाएं।

नियम –

1. कक्षा में ठीक समय पर पहुँचना।
2. चर्चा के दौरान सभी प्रषिक्षणार्थियों को बोलने का मौका मिलना चाहिए। हर एक को दो मिनट में अपने विचारों को सबके सामने रखना

पाठ एक : साक्षरता का महत्व

प्रषिक्षिका द्वारा पाठ का परिचय

– *पाठ के षुरूआत में पूछें,*

"आप सब कैसे हैं?"

"आपको संस्थान में कैसा लग रहा है?"

– *उनके उत्तर सुनने के बाद कहें,*

पिछले सत्र में आपने जाना कि साक्षरता प्रषिक्षण के लिए कौन–कौन से नियम हैं और यह किस तरह चलेगा? आपने यह भी जाना कि आप सभी एक दूसरे के साथ मिलकर प्रषिक्षण लेंगे। इसके साथ ही आपने एक सफल प्रषिक्षिका या सहयोगी के गुण तथा योग्यताओं के बारे में भी जाना।

– *अब कहें*

"आप साक्षरता से क्या समझते हैं?"

– *उनके उत्तर सुनने के बाद कहें*

इस पाठ में हम जानेंगे तथा समझेंगे कि साक्षरता का मतलब है अक्षरों और मात्राओं को पहचानना एवं पढ़ी गई बातों को समझकर दूसरों को समझाना। हमारे जीवन में साक्षरता का बहुत महत्व है तथा साक्षरता से हम अपना, अपने परिवार तथा समुदाय का विकास कर सकते हैं।

इस पाठ को हम एक–एक घंटे के 4 सत्रों में पूरा करेंगे।

उद्देष्य : इस पाठ के पूरा होने तक प्रषिक्षणार्थी इस योग्य हो जाएं कि वे

* साक्षरता का मतलब समझ सकें।
* साक्षरता के महत्व को समझ सकें।
* साक्षरता समाज के विकास में किस तरह उपयोगी है ये जान सकें।

सत्र 1 साक्षरता का परिचय

प्रषिक्षिका द्वारा सत्र का परिचय

इस सत्र में हम साक्षरता का मतलब समझेंगे तथा यह जानेंगे कि साक्षरता ही एक माध्यम व सीढ़ी है जिससे हम अपना, अपने परिवार और समाज का विकास कर सकते हैं। हम जानेंगे कि साक्षर होना क्यों आवष्यक है और साक्षर होने के क्या–क्या फायदे हैं?

सत्र योजना

चरण 1ः सहयोगी द्वारा षुरूआती चर्चा

– *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*

– *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*

साक्षरता का मुख्य उद्देष्य है– लोगों का सामाजिक, मानसिक, आर्थिक व आध्यात्मिक विकास करना। साक्षरता हमेषा सीखते रहने की प्रेरणा देती है। साक्षरता पूरी मानवजाति के सुन्दर भविष्य और समाज के संपूर्ण विकास का प्रमुख आधार है। हमारे देष में निरक्षरों की संख्या बहुत अधिक है। निरक्षर समाज के संपूर्ण विकास में अपना पूरा योगदान नहीं दे पाते हैं। बाल–विवाह, दहेज, जनसंख्या, जात–पाँत और गरीबी निरक्षरता के ही परिणाम हैं।

षिक्षित समाज की दिषा में साक्षरता पहला कदम है क्योंकि साक्षरता का उद्देष्य है लोगों को जागरूक/सजग एवं आत्मविष्वासी बनाना। साक्षरता हमेषा ही नया सीखने का रास्ता दिखाती है। साक्षरता लिखने की, बोलने की, सोचने–समझने की तथा अपनी सोच–समझ से कुछ नया करने की षक्ति देती है। इसलिए यह उंगली छोड़कर चलना अर्थात स्वयं चलने का रास्ता दिखाती है। साक्षर इंसान राजनैतिक

रूप से भी जागरूक होता है। अपने अधिकारों को जानने, समझने तथा उन्हें प्राप्त करने की दिषा और सामर्थ्य भी साक्षरता ही प्रदान करती है। यह षोषण और दमन के खिलाफ विरोध करने में भी सहायक है। साक्षरता से बना षिक्षित समाज जिसमें सीखते रहने की जिज्ञासा, उत्साह और लगन जाग उठी है, वही जीवन में आगे बढ़ने और विकास का आधार है।

साक्षरता और षिक्षा हमारे जीवन की नींव है जिससे हम एक अच्छी दुनिया बनाने की कोषिष कर सकते हैं। साक्षर लोग अपनी पसंद से अपने काम का चुनाव करने और अपना जीवन जीने के योग्य हो जाते हैं जिससे उनके साथ–साथ दूसरों को भी फायदा होता है। आर्थिक और सामाजिक रूप से आगे बढ़ने व अपने अधिकारों के लिए दुनिया के सभी देष साक्षरता पर ही निर्भर हैं। लोगों में जिस अनुपात में षिक्षा का विस्तार होता है, उसके अनुसार ही देष का विकास भी होता है। हमारे देष के पिछड़ेपन का प्रमुख कारण षिक्षा का अभाव है।

यह सच है कि कुछ इंसानों के बहुत अधिक पढ़–लिख जाने से समाज षिक्षित नहीं होता है। उसी प्रकार कुछ लोगों के अधिक अमीर होने से सबकी गरीबी दूर नहीं हो जाती है। गरीबी तभी दूर होगी जब सबका रहन–सहन अच्छा होगा और सबके पढ़ने–लिखने से एक षिक्षित समाज बनेगा।

षिक्षा अभी भी सबको नहीं मिल पा रही है, पहली बात तो यही है कि हमारे देष में महिला के प्रति भेदभाव किया जाता है। साक्षरता में भी महिलाओं को दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है। ज्यादातर घरों में आज भी लड़के और लड़की की षिक्षा के प्रति माता–पिता भेदभाव करते हैं।

चरण 2: सहयोगी द्वारा साक्षरता के बारे में जानकारी

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*

पढ़ाई–लिखाई

आमतौर पर जब भी हम पढ़ाई–लिखाई की बात करते हैं, तो हमारे दिमाग में वे लोग आते हैं जो पढ़–लिखकर नौकरी करते हैं, अंग्रेजी बोलते हैं और गाँव के लोगों जैसे कपड़े नहीं पहनते, थोड़े बने ठने से दिखते हैं। सच यह है कि इस तरह का भेदभाव पढ़े–लिखे लोगों ने ही पैदा कर दिया है। जो इंसान पढ़ा–लिखा नहीं है वह अपने आप को नीचा महसूस करता है क्योंकि पढ़े–लिखे लोग उसे अनपढ़ कहते हैं। षहरों में रहने वाले कई लोग तो यह मानते और कहते भी हैं कि अनपढ़ लोग तो मूर्ख होते हैं, लेकिन यह सही नहीं है। सवाल पढ़े–लिखे का नहीं है, सवाल यह है कि पढ़ाई–लिखाई का उपयोग हम किस तरह कर रहे हैं। यह जानने के लिए समझना जरूरी है कि पढ़ाई–लिखाई करना क्यों आवष्यक है? पढ़ने–लिखने से क्या–क्या फायदे हैं?

जीवन में आगे बढ़ने की पहली सीढ़ी साक्षरता है।

साक्षरता को जीवन में आगे बढ़ने की पहली सीढ़ी कहा गया है। साक्षरता षब्द का मतलब है पढ़ना, लिखना और जो भी पढ़ा या लिखा गया हो, उसको समझना और लिखी हुई बातों को दूसरों के सामने पढ़कर समझाना। हमें अच्छी खेती करनी हो, गाय, बकरी, या मछली पालने का धंधा करना हो, हमारे बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, कलेक्टर, षिक्षाकर्मी, नर्स, दाई या आँगनवाड़ी वाली बहनजी बनना हो। कम्प्यूटर या टाइपिंग सीखना हो, ट्रैक्टर सुधारना हो या हैंडपम्प, मोटर सुधारना हो या बिजली, तरह–तरह का खाना बनाना सीखना हो, कपड़े सिलना सीखना हो, बैंक से लोन लेना हो, जमीन किसी के नाम पर करनी हो, पंचायत का सदस्य, सरपंच या ग्राम सेवक के पद पर काम करना हो। घर में किसी बीमार को दवाई देना हो, हमें सरकारी राषन की दुकान या किसी अन्य दुकान से कुछ खरीदना–बेचना हो, पैसों का हिसाब करना हो, जल, जमीन और जंगल की बात हो या कोई अन्य काम हो। यह सब ठीक ढंग से तभी हो पाएगा, जब हम पढ़े–लिखे होंगे। अपने अधिकारों के बारे में पूरी जानकारी होगी कि हमारे अधिकार क्या हैं? यदि हमारे अधिकार हमें नहीं मिल रहे हैं तो हमें अपने अधिकार लेने के लिए कहाँ और कैसे जाना है? हमें अधिकार कहाँ से मिलेंगे? जब हमें अपने अधिकारों की पहचान होगी तभी हम अपने जीवन की दूसरी सीढ़ियों पर चढ़ पाएंगे। यह सब तभी हो पाएगा, जब हम खुद पढ़े–लिखे होंगे और हमें इन बातों की जानकारी होगी।

षिक्षा ही हमारे सभी गुणों के खजाने को बाहर निकालती है।

कई बार यह सुनने में आता है कि गाँव के लोग पढ़कर क्या करेंगे, छोटे लोग पढ़कर क्या करेंगे, गरीब लोग पढ़कर क्या करेंगे, लड़कियाँ पढ़कर क्या करेंगी। ऐसा नहीं है, जब हम जाग जाएं तभी सबेरा होता है। पवित्र लेखों में भी कहा गया है कि हर इंसान पढ़ने–लिखने के योग्य है। आज अंधे, बहरे और अपंग सभी लोग पढ़कर अपना विकास कर रहे हैं।

"मनुष्य को अत्यंत मूल्यवान रत्नों से परिपूर्ण एक खान समझो। केवल शिक्षा ही इसके कोषों को उजागर कर सकती है और समस्त मानवजाति को इसके लाभ के योग्य बना सकती है।"

जैसे खान के अंदर कीमती रत्न भरे होते हैं उसी तरह षिक्षा ही हमारे अंदर छुपे हुए गुणों को सामने लाती है और इंसान को इसका लाभ उठाने के योग्य बनाती है। षिक्षा ही वह साधन है जो इन हीरे समान गुणों को तराषकर चमकदार बना सकती है। पढ़े–लिखे होने से इंसान का अपना विकास होता है।

षिक्षा के अनेक फायदे हैंः–

1. पढ़ाई–लिखाई एक ऐसा धन है, जिसे कोई चुरा नहीं सकता और न ही कोई छीन सकता है। इसे जितना बाँटा जाए उतना ही बढ़ता है।
2. पढ़ने–लिखने से हमें अपने अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी मिलती है, जिससे हम अपने आपको और दूसरों पर अन्याय होने से बचा सकते हैं व न्याय दिला सकते हैं।
3. पढ़ने–लिखने से हमारा अपने आप पर विष्वास बढ़ता है और हम स्वयं अपनी मदद कर सकते हैं।
4. पढ़े–लिखे होने से हमारे मन का डर खत्म हो जाता है।
5. पढ़ने–लिखने से जीवन के हर विषय की जानकारी मिलती है, जैसेः– कला, ज्ञान व विज्ञान, साहित्य, भूगोल, समाज, देष, विदेष, खेती, बच्चों का पालन, उनका स्वास्थ्य, उन्हें अच्छी षिक्षा देने संबंधी जानकारी।
6. पढ़ाई–लिखाई इंसान को जिम्मेदार बनाती है। वह अपनी हर जिम्मेदारी को अच्छी तरह से निभाता है, जैसेः– दुकान की, घर की, खेती की, नौकरी की आदि।
7. पढ़ाई–लिखाई से इंसान को अपने व अपने परिवार के लिए पैसा कमाने में मदद मिलती है।
8. पढ़े–लिखे होने से हम धर्म की पवित्र किताबें पढ़ सकते हैं और अपने जीवन के उद्देष्य को समझ सकते हैं। जीवन का उद्देष्य जानने से हम अपने परिवार और सभी लोगों के साथ मिल–जुलकर रहते हैं जिससे हम एक अच्छा परिवार, अच्छा समाज और अच्छी दुनिया बना सकते हैं।

चरण 3ः सहयोगी द्वारा 'साक्षरता' पर चर्चा

– *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*

– *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*

किसी को साक्षर बनाने या साक्षर करने में मदद करना एक आध्यात्मिक कर्म है, एक पूजा है, एक सेवा है, अंधेरे में दीया जलाने के समान है, एक संकल्प है, आत्मा का निर्णय है, साक्षरता एक बहुत ही महान काम है। पवित्र लेखों में भी कहा गया है किः–

"वह शिक्षक धन्य है जो दूसरों को पढ़ाने का काम अपने ऊपर लेता है।"

दूसरों को षिक्षित करने की जिम्मेदारी लेने वाले षिक्षक को महान कहा गया है, क्योंकि यह एक महान, नेक और पवित्र काम है।

"मानवजाति के प्रति जो सर्वोत्तम सेवा कर सकता है, वह है दूसरों का शिक्षण व प्रशिक्षण।"

षिक्षक के योगदान के बारे में कहा गया है कि षिक्षक प्रभु के सेवक हैं। वे इस दायित्व को पूरा करने के लिए आगे आए हैं जो पूजा के समान पवित्र है।

प्रषिक्षिका द्वारा सत्र का समापन

इस सत्र में हमने साक्षरता का मतलब समझा। साक्षरता से हम अपना, अपने परिवार का और समुदाय का विकास कर सकते हैं। हमने जाना साक्षर होना क्यों आवष्यक है और साक्षर होने के क्या–क्या फायदे हैं?

अगले सत्र में हम साक्षरता का महत्व जानेंगे।

सत्र 2

साक्षरता का महत्व

प्रषिक्षिका द्वारा सत्र का परिचय

पिछले सत्र में हमने साक्षरता का मतलब समझा। साक्षरता से हम अपना, अपने परिवार और समुदाय का विकास कर सकते हैं। हमने जाना कि साक्षर होना क्यों आवष्यक है और साक्षर होने के क्या–क्या फायदे हैं?

इस सत्र में हम साक्षरता के महत्व के बारे में जानेंगे।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा साक्षरता के महत्व पर जानकारी

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*

हर इंसान चाहे वो लड़का हो या लड़की हो उसे पढ़ने–लिखने का पूरा अधिकार है लेकिन केवल पढ़ना–लिखना ही काफी नहीं है। पढ़ने–लिखने का उद्देष्य है कि लोग पढ़–लिखकर अपने व दूसरों के जीवन में आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक परिवर्तन ला सकें।

ईष्वरीय अवतारों ने कहा है कि लोग साक्षर होकर पवित्र ग्रन्थों के लेखों को खुद ही पढ़ सकें और दूसरों को पढ़कर समझा सकें जिससे वे अपना जीवन उनके द्वारा दी गई षिक्षाओं के अनुसार बिता सकें। यह तभी हो सकता है जब सभी पढ़–लिख जाएंगे।

अगर किसी बच्चे के षरीर का विकास देखना हो तो यह देखा जाता है कि उसका वजन उम्र के साथ कितना बढ़ रहा है। इसी तरह किसी देष का विकास देखना हो तो यह देखा जाता है, कि वहाँ के लोगों में से कितने लोग साक्षर हैं और कितने लोग स्कूल छोड़ देते हैं। भारत देष में हर दस साल बाद जनगणना होती है जिसमें ये सारी बातें छपती हैं कि हर राज्य के, हर तहसील, षहर या गाँव में कितने लोग साक्षर हैं, कितने स्कूल जाते हैं और कितने लोग कौन सी कक्षा से पढ़ाई छोड़ देते हैं। यह जानना जरूरी है कि कितने लोग लिखी हुई बात को पढ़ सकते हैं और समझकर उसे अपने मन से लिख सकते हैं। हर रोज अपने काम धंधे से जुड़े हिसाब–किताब कर सकते हैं। अगर किसी जगह रहने वाले लोगों में साक्षर लोगों की संख्या तेजी से बढ़ जाती है, तो माना जाता है कि वहाँ के लोग आगे बढ़ रहे हैं उनमें जागरूकता आ रही है।

साक्षर होने से लोगों में विष्वास आता है वे अपने जीवन में विकास करते हैं, उनमें सहनषीलता आती है और उनके जीवन में षांति रहती है। हमें गरीबी को दूर करने में षिक्षा को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि देष को साक्षर होने में ज्यादा पैसा खर्चा करना पड़ता है लेकिन इससे होने वाले फायदे भी बहुत ज्यादा हैं। साक्षरता से होने वाले फायदे कुछ तो सीधे दिखाए जा सकते हैं, परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो सीधी तरह से देखे नहीं जा सकते हैं परन्तु उनका मूल आधार साक्षरता ही होती है।

साक्षरता आर्थिक स्थिति अच्छी करने में ही नहीं बल्कि सामाजिक और पारिवारिक स्थिति भी सुधारने में मदद करती है। एक षिक्षित इंसान ही ज्यादा पैसा कमाने योग्य होता है, सही मायने में षिक्षित इंसान वह है जो अंधविष्वास और गलत मान्यताओं को नहीं मानता। षिक्षित माता–पिता के बच्चे ज्यादा स्वस्थ होते हैं, जो स्कूल जाकर पढ़ सकते हैं। इस तरह संपूर्ण विकास के लिए और हर क्षेत्र में सफलता पाने के लिए साक्षर होना बहुत जरूरी है। षिक्षा ही हमारे सभी प्रयासों का मूल आधार है।

केवल अक्षर ज्ञान हो जाना या पढ़ना–लिखना ही काफी नहीं है। साक्षर होकर लोगों को ज्ञान प्राप्त होगा, उनकी जानकारी बढ़ेगी उनको सही–गलत का पता चलेगा तभी वे सषक्त होंगे। इससे उनका आत्मविष्वास बढ़ेगा। उनके हाथ में षक्ति तब होगी जब वे अपने निर्णय स्वयं लेंगे, तभी वे समाज को सही दिषा दे पाएंगे। इस तरह साक्षरता के माध्यम से ही लोगों का सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, कलात्मक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास एक साथ होता है।

हमारे देष में, विषेष तौर पर आदिवासी महिलाएं विकास में बहुत पीछे हैं उन्हें पुरूषों के बराबर अधिकार मिलने चाहिए।

"ईश्वर की दृष्टि में महिला और पुरूष दोनों समान है और सदा समान रहेंगे। ईश्वर ने महिला की संरचना पुरूष के लिए और पुरूष की संरचना महिला के लिए की है।"

ईष्वर की नजर में महिला और पुरूष दोनों बराबर है, दोनों को एक दूसरे के लिए ही बनाया गया है जिससे वे दोनों एक साथ मिलकर अपना और अपने परिवार का विकास कर सकें।

"मानवजाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख है, एक पुरूष दूसरा महिला। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति द्वारा हिलाए नहीं जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में ऊँची उड़ान असंभव है।"

यह बात सच है कि ईष्वर ने महिला और पुरूष दोनों को समान अधिकार दिए हैं और सरकार ने भी महिला–पुरूष दोनों को समान अधिकार दिए हैं। सरकार द्वारा भी महिला–पुरूष को अपनी षक्ति का सही उपयोग करने के लिए नीतियां, कानून और योजनाएँ बनाई गई हैं लेकिन सषक्तिकरण तभी होगा जब इन सभी का उपयोग करने के लिए महिलाएं षिक्षित और प्रषिक्षित होंगी।

चरण 2: सहयोगी द्वारा षिक्षा के महत्व पर जानकारी

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*

भारत के संविधान ने सभी को षिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया है, लेकिन आज भी भारत षिक्षा के अभाव से पीड़ित है। हर माता–पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को अच्छे संस्कार, आध्यात्मिक षिक्षा, ज्ञान–विज्ञान की षिक्षा बचपन से ही दें, ताकि जब वे बच्चे बड़े हों तब उनमें सभी गुण हों। बच्चों को अच्छे स्कूल में रोज भेजना चाहिए। माता–पिता को इस बात का विषेष ध्यान रखना चाहिए कि उनका बच्चा पढ़ने–लिखने में पीछे तो नहीं है और अपने बच्चों को वह चाहे लड़का हो या लड़की उसे सही, नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी षिक्षा देनी चाहिए। वे पवित्र लेखों को खुद ही पढ़ सकें और उनके अनुसार अपना जीवन बिता सकें।

षिक्षित समाज का मतलब है कि एक ऐसे समाज की रचना करें जिसमें सभी लोगों को समान अधिकार तथा समान अवसर मिले। डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, व्यापारी, षिक्षक, मजदूर, गृहिणी सभी नई–नई जानकारी के संपर्क में हों। नई बातें जानते रहने की प्रवृत्ति ही षिक्षित समाज की पहचान है। साक्षरता के अभाव में षिक्षित समाज की कल्पना बेबुनियाद है क्योंकि निरक्षर तो षक्तिहीन है और षिक्षित षक्तिवान, यही असमानता षोषण को पोषण देती है।

सबकी साक्षरता का मतलब है कि कोई भी बच्चा स्कूल से दूर न रहे, वह किसी भी तरह स्कूल से जुड़ा रहे, कोई भी वयस्क निरक्षर न रहे, कोई भी युवा बेरोजगार न हो तथा एक भी बच्चा बाल श्रमिक के रूप में काम न करे। समाज से अंधविष्वास एवं गलत रीति रिवाज दूर कर नई रोषनी लाना ही साक्षरता है।

साक्षरता के माध्यम से ही अक्षर ज्ञान एवं सामान्य ज्ञान के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक मानसिकता, आदर्ष छोटा परिवार, परिवार नियोजन, स्वास्थ्य रक्षा, पर्यावरण संरक्षण, मताधिकार जागरूकता, नैतिक मूल्य का ज्ञान इत्यादि सभी कुछ सिखाया जा सकता है और तभी षिक्षित समाज का विकास होता है।

साक्षरता एक ऐसा अभियान है जिसमें लाखों लोगों को एक साथ लेकर चलना है यह तभी सफल हो सकता है, जब अभियान से प्रभावित सभी लोग स्वयं महसूस करें कि वे भी उस अभियान का एक महत्वपूर्ण अंग हैं जिससे उन्हें अपनी जिम्मेदारी का अहसास हो सके। साक्षरता आंदोलन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि एक ऐसा प्रेरक माहौल पूरे समय बना रहे कि 'मुझे पढ़ना है या मुझे पढ़ाना है'।

षिक्षित समाज से ही एक संपूर्ण विकसित समाज बनेगा। इसके लिए पहली षर्त है महिलाओं की सक्रिय भागीदारी। यह भागीदारी तभी संभव है जब महिलाएं भी मानसिक रूप से पूरी तरह से विकसित हों। एक महिला साक्षर होती है तो वह अपने पूरे परिवार को षिक्षित करती है व समाज का विकास करती है साक्षरता ही इस दिषा में पहला कदम है।

चरण 3: सहयोगी द्वारा बच्चों की षिक्षा के महत्व पर जानकारी

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*
- *नीचे लिखा कथन किसी एक प्रषिक्षणार्थी को पढ़ने को कहें और आप समझाएं।*

सभी माता–पिता अपने बच्चों को अच्छा इंसान बनाना चाहते हैं पर हम बच्चों का जीवन अच्छा कैसे बना सकते हैं?

"हे मेरी प्यारी माताओं! ईश्वर की नजर में पूजा करने का सबसे उच्च तरीका है कि अपने बच्चों को शिक्षित करें और पूर्णरूप से मानवजाति के गुणों के प्रति प्रशिक्षित करें, इससे बढ़कर उच्च कर्म कोई भी नहीं है।"

हम सभी यह जानते हैं कि बच्चे की पहली षिक्षिका उसकी माँ होती है, अगर माँ पढ़ी–लिखी होगी तो वह अपने बच्चों को अच्छी षिक्षा

देगी ताकि उनका भविष्य अच्छा बन सके। उनके लिए क्या अच्छा है, क्या बुरा है यह सब माँ बच्चों को बचपन से ही बताती है।

लड़के–लड़की को एक समान प्यार तथा देखभाल मिलनी चाहिए। दोनों को षिक्षा के समान अवसर देने चाहिए क्योंकि ईष्वर की नजर में सभी इंसान समान हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात है लड़की की षिक्षा, जो लड़के की षिक्षा से ज्यादा जरूरी है, क्योंकि लड़की ही माँ बनेगी तथा बच्चे की पहली षिक्षिका। माँ बच्चे को जैसी षिक्षा देगी बच्चा वैसा ही बनेगा। माँ ही बच्चों में अच्छे गुणों का विकास करती है, वही बच्चों के चरित्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती है।

प्रषिक्षिका द्वारा सत्र का समापन

इस सत्र में हमने साक्षरता और षिक्षा के महत्व को जाना।

अगले सत्र में हम जानेंगे कि साक्षरता किस तरह हमारे जीवन के विकास में उपयोगी है?

सत्र 3 साक्षरता और हमारा विकास

प्रषिक्षिका द्वारा सत्र का परिचय

पिछले सत्र में हमने साक्षरता और षिक्षा के महत्व को जाना।

इस सत्र में हम जानेंगे कि साक्षरता हमारे जीवन के विकास में किस तरह उपयोगी है?

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा षुरूआती चर्चा

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*

साक्षरता का मतलब है अक्षरों को पहचानकर उन्हें पढ़ना, लिखना, बोलना और उनका मतलब समझ लेना। यदि हमें गिनती आती है तो हम जोड़ना, घटाना, गुणा व भाग करके हिसाब कर सकते हैं। हम साक्षर होकर कोई भी भाषा सीख सकते हैं। भाषा को सीखना जीवन में उसी तरह है जैसे अंधेरे कमरे में खिड़की खोलना। हमें किसी भी विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए साक्षर होना जरूरी है। विषय का ज्ञान एक दरवाजे की तरह है, जैसे दरवाजे से ही हम एक भवन के अंदर पहुँच सकते हैं उसी तरह षिक्षा के भवन का दरवाजा साक्षरता है। यदि किसी भी विषय को जानना है तो पहले साक्षर होना जरूरी है। इसीलिए कहा गया है कि षिक्षा की सीढ़ी का पहला कदम 'साक्षरता' है।

षिक्षा से हमारे अंदर षक्ति व आत्मविष्वास आता है, हम अपने काम खुद कर सकते हैं व दूसरों को सही रास्ता दिखा सकते हैं, अपनी सहेली या परिवार को पत्र लिखना, पत्र का जबाव देना, अखबार पढ़ना, किताबें पढ़ना, बाजार से सामान खरीदना, नौकरी करना, काम करने के नए तरीके सीखना जैसे टाईपिंग, कम्प्यूटर सीखना, कारखाने में काम करना, बिजली की मोटर से खेतों में पानी देना, आटा चक्की चलाना, पंखे, प्रेस आदि चलाना।

षिक्षा सबसे बड़ा सुरक्षित धन है, जिसे कोई चुरा या छीन नहीं सकता। हमारे अंदर पढ़ने–लिखने की भावना होना जरूरी है जब भी हमें काम करने के बाद समय मिले रोज एक घंटा, आधा घंटा, दिन या रात में हमें पढ़ना–लिखना चाहिए। साक्षर होकर हम अपना विकास तो करते ही हैं, साथ में अपने समाज, गाँव और देष का विकास भी करते हैं। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक षिक्षा की जरूरत हर उम्र में, हर जगह और हर समय होती है। पढ़ने–लिखने की कोई उम्र नहीं होती, जब भी अवसर मिले पढ़–लिख सकते हैं। आज बहुत तेजी से विकास हो रहा है, अगर हम पढ़े–लिखे नहीं होगें तो विकास के रास्ते पर बहुत पीछे रह जाएंगे।

वह जमाना और था जब इंसान पेड़ों के पत्ते, छाल, घास आदि पहनते थे। अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए इषारों से बात करते थे, तरह–तरह की आवाजें निकालते थे। पत्थरों और चट्टानों पर चित्र बनाते थे। लेकिन आज के जमाने में षिक्षा से ही हम अपना विकास कर सकते हैं। खेती करना हो, फल या सब्जियाँ बेचना हो, दुकान लगाना हो या दूध बेचना हो, कोई भी नौकरी करना हो, षिक्षित होना जरूरी है। पढ़ने–लिखने से दूसरों के साथ व्यवहार करने में, लेन–देन करने में, बाहर आने–जाने में आसानी होती है। अपने जीवन में

आने वाले सही मौकों को पहचानकर उनका फायदा लेने में, अधिकारों और अपने मान–सम्मान की रक्षा करने के लिए षिक्षा ही सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

चरण 2: सहयोगी द्वारा साक्षरता पर जानकारी

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*

षिक्षा हर तरह की षक्ति के खजाने की चाबी है चाहे हमें इस दुनिया में पेट भरने का गुण सीखना हो या षासन करना हो। मामला चाहे समाज को बदलने का हो या अर्थव्यवस्था का, लोगों को मानसिक रूप से बदलना हो या उन्हें नैतिक षिक्षा देकर अच्छा समाज बनाना हो, लोगों को षिक्षित करना जरूरी है। अक्षर ज्ञान हो जाना या केवल पढ़ना–लिखना आ जाना ही काफी नहीं है साक्षरता का मूल उद्देष्य है, लोगों का साक्षर होकर ज्ञान प्राप्त करना जिससे उनकी जानकारी बढ़ेगी, सही–गलत का फर्क पता चलेगा, समाज में अपने अधिकारों व कर्तव्यों का पता चलेगा। वे सषक्त होंगे, उनका आत्मविष्वास बढ़ेगा, उनके हाथ में षक्ति होगी, जिससे वे अपने निर्णय स्वयं लेंगे और समाज को सही दिषा देंगे।

साक्षरता के माध्यम से लोगों का आर्थिक, वैज्ञानिक, कलात्मक, सांस्कृतिक विकास एक साथ हो सकता है साक्षरता हमें अंधविष्वासों से दूर करती है और ज्ञान के प्रकाष को बढ़ाती है, वह हमारे जीवन की सफलता की चाबी है, जो हमारे जीवन के ज्ञान के सभी तालों को खोलती है।

चरण 3: सहयोगी द्वारा साक्षरता से हमारे विकास पर जानकारी

- *किसी एक प्रषिक्षणार्थी को नीचे लिखी जानकारी पढ़ने को कहें।*
- *अगर किसी प्रषिक्षणार्थी को जानकारी समझने में परेषानी हो तो उन्हें उनकी बोली में समझाएं।*

आज सभी तरह के ज्ञान, विज्ञान और कला को सीखने का एक ही तरीका है, षिक्षित होना। सभी ईष्वरीय अवतारों ने हर युग में हर मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करने के लिए, अपना विकास करने के लिए, उसके मार्गदर्षन के लिए उपदेष, दर्षन व विधि–विधान पवित्र पुस्तकों के माध्यम से दिए हैं।

इंसान की प्रवृत्ति है कि वह अवगुणों, बुरी आदतों और बुरी संगत में पड़कर बहुत जल्दी व आसानी से अपनी अच्छाईयों को खो देता है। अच्छे गुणों का विकास अच्छी षिक्षा, पुस्तकें व संगत से होता है। षिक्षा पाकर इंसान गुणवान, अच्छा व चतुर बन सकता है और अच्छी षिक्षा के माध्यम से अच्छे गुणों जैसे दया, प्रेम, न्याय, सच्चाई, ईमानदारी, वफादारी का अपने अंदर विकास कर जीवन भर उनका पालन करता है।

षिक्षा प्राप्त करने का मतलब है हमारा हर तरह का विकास। यही एक तरीका है, जो हमारी सोच तथा काम करने के ढंग में सुधार का जरिया बनता है, परिणाम स्वरूप समाज का विकास होता है।

आज सभी प्रकार की सुविधाएं दोगुनी हो गई हैं परन्तु फिर भी जनसंख्या एवं सुविधाओं में संतुलन नहीं है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण निरक्षरता की समस्या बढ़ गयी है। समाज की प्रगति में निरक्षरता सबसे बड़ी बाधा है। विकास के साधनों और जनसंख्या में एक निष्चित अनुपात होना आवष्यक है, क्योंकि इसका असर जीवन की गुणवत्ता पर होता है। जहाँ तक जीवन की गुणवत्ता का प्रष्न है, इसके लिए भी जनसंख्या वृद्धि एवं निरक्षरता ही बाधक है। यह विषेष मान्यताओं, साधन, परिवेष, षिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर क्या है इस पर निर्भर करती है।

जब समाज में लोगों के जीवन स्तर में सुधार होने के प्रयास तेज होते हैं और समुचित रूप से लोगों को सामाजिक सुविधाएं मिलने लगती हैं तो लोगों के रहन–सहन का स्तर बढ़ने लगता है, धीरे–धीरे जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है जिसके लिए उचित षिक्षा, स्वास्थ्य, पारिवारिक जीवन, छोटा परिवार, पर्याप्त सामाजिक सुविधाएं और देष की अच्छी आर्थिक स्थिति का होना जरूरी है।

साक्षरता एक ऐसा माध्यम है जिससे इंसान और समाज में नया जोष भरकर उनकी काम करने की योग्यता बढ़ाई जा सकती है। जीवन के हर तरह के विकास के लिए षिक्षा ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा इंसान जन्मजात षक्तियों को विकसित करके अपने व्यवहार एवं विचारों में बदलाव कर सकता है।

षिक्षा के बिना जीवन की विभिन्न परिस्थितियों की जानकारी, कार्यों के लिए प्रयास एवं समस्याओं का समाधान करने की योग्यता का विकास नहीं हो पाता है और व्यक्तित्व विकास भी सम्भव नहीं है। षिक्षा जीवन जीने वाली सतत् प्रक्रिया है जीवन भर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इंसान सीखता रहता है और यह अनुभव उसे जीवन जीने एवं जीवन की समस्याओं का समाधान करने में सहयोग देता है। षिक्षा इंसान

को समाज के साथ अभिन्न रूप से जोड़ने का प्रयास करती है। यह समाज के आदर्ष को समझने और उसे लगातार विकसित करने में सही रास्ता दिखाती है। षिक्षा वह साधन है जो लोगों के व्यक्तित्व विकास में सक्रिय रूप से योगदान देती है। षिक्षा के द्वारा ही इंसान में नैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों को विकसित किया जाता है। लोगों का हर तरह से विकास के लिए षिक्षा एवं साक्षरता सषक्त साधन है किसी भी समाज के विकास के लिए षिक्षा एवं स्वास्थ्य मूलभूत आधार है व षिक्षा के माध्यम से ही उचित स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है।

प्रषिक्षिका द्वारा सत्र का समापन

इस सत्र में हमने जाना कि साक्षरता किस तरह हमारे जीवन के विकास में उपयोगी है।

अगले सत्र में हम पाठ के सभी सत्रों का दोहराव करेंगे और मौखिक परीक्षा होगी।

सत्र 4 पाठ का दोहराव

प्रषिक्षिका द्वारा सत्र का परिचय

पिछले सत्र में हमने जाना कि साक्षरता किस तरह हमारे जीवन के विकास में उपयोगी है।

इस सत्र में हम पाठ के सभी सत्रों का दोहराव करेंगे और यह जानने के लिए आपकी मौखिक परीक्षा ली जाएगी कि दी गई जानकारी आपको याद है या नहीं।

सत्र योजना

चरण 1: सहयोगी द्वारा पाठ का दोहराव

- *संक्षेप में पाठ के सभी सत्रों का दोहराव करवाएं।*
- *यह जानने की कोषिष करें कि प्रषिक्षणार्थियों को सारी जानकारी याद है या नहीं।*
- *जरूरत पड़ने पर प्रषिक्षिका की मदद लें।*

चरण 2: सहयोगी द्वारा मौखिक परीक्षा

- *हर प्रषिक्षणार्थी को समूह से थोड़ा दूर ले जाएं फिर उनसे एक–एक करके नीचे लिखे प्रष्नों का उत्तर बोलकर बताने को कहें।*
- *उन्हें हर प्रष्न का उत्तर सोचने के लिए एक मिनिट का समय दें।*
- *परीक्षा लेने के लिए आप सहायता करने योग्य प्रषिक्षणार्थियों की मदद ले सकती हैं।*
- *जब आप किसी प्रषिक्षणार्थी से प्रष्न पूछ रही हों, तो इस दौरान समूह की अन्य प्रषिक्षणार्थियों से पाठ का दोहराव करने को कहें।*
- *यह परीक्षा कुल 30 अंक की है।*
- *हर प्रष्न के आगे अंक दिए गए है।*
- *प्रषिक्षणार्थी प्रष्न का पूरा उत्तर बताएं तो उन्हें पूरे अंक दें यदि वे अधूरा उत्तर बताते हैं तो उत्तर के अनुसार अंक दें।*

क्र.	प्रष्न	अंक
1	साक्षरता से आप क्या समझते हैं?	5
2	साक्षरता का हमारे जीवन में क्या महत्व हैं?	5
3	शिक्षा हमारे जीवन के विकास में किस तरह उपयोगी हैं?	5
4	महिलाओं को साक्षर होना क्यों जरूरी हैं?	5
5	साक्षरता से हमारा देश किस तरह विकास कर सकता है?	5
6	आप इस संस्थान में किस उद्देश्य से आई हैं?	5

नोट : प्रषिक्षणार्थियों को मिले अंक देखने के बाद अगर जरूरत महसूस हो तो आप पाठ का दोहराव करवा सकती है या दोबारा परीक्षा ले सकती है।

प्रषिक्षिका द्वारा पाठ का समापन

इस पाठ में हमने साक्षरता का मतलब समझा। यह जाना कि साक्षर होकर हम अपना, अपने परिवार व समुदाय का विकास कर सकें। हमने जाना कि साक्षर होना क्यों आवष्यक है व साक्षर होने के क्या–क्या फायदे हैं व किस तरह साक्षरता हमारे जीवन और देष के विकास में उपयोगी हो सकती है।

अगले सत्र में हम नया पाठ षुरू करेंगे जिसमें हम मुख्य षब्द नाम का परिचय व उसका मतलब समझेंगे।